मुझे गांधी क्यों पसंद नहीं हैं ?

- अभिनव अनंत

http://www.dharamrajyam.blogspot.com

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना

"यदि हमारी सभ्यता की सुरक्षा की जानी है, उसे सुरक्षित रखा जाना है, तो हमें महान पुरूषों के प्रति अन्धश्रद्धा और अन्धभक्ति को समाप्त कर देना चाहिए। महान व्यक्ति महान त्रुटियाँ भी किये करते है।" कार्ल पौपर की इन पंक्तियों का अर्थ हुआ कि कोई भी नहीं- चाहे वह महात्मा हो, पैगम्बर हो या अन्य कुछ भी हो- पुनर्विचार और और आलोचना की सीमाओं से परे नहीं रखा जा सकता। यह पंक्तियाँ गांधी जी पर बिल्कुल सार्थक बैठती है। संविधान कहता है कि चाहे महात्मा गांधी हो या कोई अन्य नागरिक सभी समान है। अगर मैं स्वदेशी के लिए उनकी प्रशंसा कर सकता हूँ, तो मुझे यह अधिकार होना चाहिए कि कहाँ पर वह पथभ्रष्ट हो गये।

मोहनदास करमचन्द गांधी की उनके जीवन काल में वीर सावरकर, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, विट्ठल भाई पटेल, लाला लाजपत राय, भगत सिंह, सुखदेव, मन्मथनाथ गुप्त, गुरूदत्त तथा अन्य क्रान्तिकारियों ने कठोर शब्दों में आलोचना की थी। और तो और ब्रिटिशों के विश्वासपात्र डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने भी गांधी का विरोध किया। परन्तु गांधी वध के बाद उन्हें महात्माओं की पंक्ति में शामिल कर दिया गया।

मुझे गांधी क्यों पसंद नहीं हैं ? - अभिनव अनंत

जो लोग कभी देश के स्वतन्त्रता समर में गांधी की भूमिका पर प्रश्नचिह्न लगाया करते थे, वे उस संबंध में अब मौन हैं, क्योंकि चुनाव और वोट बैंक ने उनकी आवाज बंद कर दी हैं। हाँ, वीर सावरकर की विचारधारा को अपनाते हुए जीवन पथ पर अग्रसर होने वाले लोग गांधी के सिद्धांतों, गांधीवाद व गांधी दर्शन की कड़े शब्दों में आलोचना करते हैं। इसी कारण वे गांधीवादियों के क्रोध का शिकार हो रहे हैं और परिणामस्वरूप चुनावों में हारों व सामाजिक तिरस्कार को निरन्तर सहन कर रहे हैं।

सावरकरवादी और कुछ थोड़े से जागरूक नेताओं को छोड़कर भारत के बहुसंख्यक राजनैतिक दल, जो यथार्थ में गांधी के सिद्धांतों को पूर्णतः आत्मसात नहीं कर सके तो भी वे गांधीवाद की आड़ में अपना राजनैतिक हित खोज रहे है। गांधी की मोहर लगाकर अपनी राजनैतिक नैय्या पार लगाने का निरंतर प्रयास कर रहे हैं। वर्तमान भारतीय जनता पार्टी (पुराना जन संघ) के द्वारा गांधी के सिंबल को अपनाना और उसके द्वारा गांधियाई समाजवाद का दम भरना यह प्रमाणित करता है कि गांधी किसी के भी अनुरूप हो सकते है, ठीक बैठ सकते है, उनका किसी के साथ भी साम्राज्य स्थापित किया जा सकता हैं।

मोहनदास गांधी के यथार्थ रूप को अभिव्यक्त करने के लिए इस पुस्तक का लेखन किया गया है। इसके लेखन में बहुत सारी संदर्भित पुस्तकों व वेबलेखों का उपयोग किया गया हैं। इस पुस्तक का उद्देश्य किसी व्यक्ति या समुह की भावनाओं को आहत करना नहीं है, बल्कि गांधी जी के यथार्थ से विश्वमानवता को परिचित कराना हैं। किसी भी वाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र मेरठ न्यायालय मान्य होगा। यदि समय मिला और संसाधन उपलब्ध हुए तो भविष्य में गांधी जी पर एक फिल्म बनाने का प्रयास भी किया जायेगा।

-अभिनव अनंत

भारत स्वाभिमान दल

धर्मराज्यम्

ब्रिटिश आर्मी का एक अधिकारी : मोहन दास करमचंद गांधी

गांधी जो दक्षिणी अफ्रीका में हुए ज़ुलू विद्रोह को दबाने के लिए ब्रिटिश सरकार की ओर स्वयं सेवक बना , गांधी जिसने दक्षिणी अफ्रीका में ब्रिटिश की ओर बोअर युद्ध में भाग लिया ।

चित्र के मध्य में मोहनदास गांधी ब्रिटिश सेना में नौकरी के दौरान

गांधी जो भारत आने से पूर्व इंग्लैंड में प्रथम महायुद्ध में एक सैनिक अधिकारी था , वे 9 जनवरी 1915 को भारत आये , गांधी स्वयं भारत नहीं आये , उन्हें मि, रॉबर्ट्स ने अपने देश जाने का आग्रह किया ,

गांधी जी अपनी आत्मकथा में इसका विवरण देते हैं और कहते हैं

" मैने यह सलाह मान ली और देश जाने की तैयारी की "

गांधी जी ने केवल रॉबर्ट्स की ही सलाह नहीं मानी बल्कि जब लार्ड मौन्टबेटेन भारत के अंतिम वॉइसरॉय ने गांधी जी को आग्रह किया कि आप भारत के विभाजन को मान लो , तब भी गांधीजी ने माउंटबेटन के आग्रह को मान लिया अन्यथा वो अडिग थे कि देश का विभाजन मेरी लाश पर बनेगा और इस प्रकार देश का विभाजन ही नहीं हुआ बल्कि 30 -35 लाख लोग मारे गए जो गांधी जी के आश्वासन पर अपने अपने घरों में ही बने रहे और विभाजन की त्रासदी के शिकार हुए ।

गांधी जी समय-समय पर अंग्रेजों से सहयोग लेते व देते रहते थे। दक्षिण अफ्रीका के बोअर तथा जुलु युद्धो में अंग्रेजो की सहायता करने के कारण अंग्रेजों ने 1915 में उन्हे **'केसर-ए-हिन्द'** का पदक दिया था।

अखंड भारत में गांधीजी को प्रथम विश्व युद्ध के दौरान अंग्रेजों की सेना के लिए घूम घूम कर लोगों को भर्ती करवाने के कारण **"भर्ती करवाने वाला एजेंट"** कहा जाता था।

गांधी ने 1915 में भारत आते ही सबसे पहला काम ये किया की तत्कालीन वायसराय को एक पत्र.लिख कर अपनी सेवायें **'साम्राज्य'**को अर्पित कीं!

उस समय दूसरा विश्व युद्ध चल रहा था और भारत में तिलक और उनके साथियों के आन्दोलन के कारण ब्रिटिश साम्राज्य को सेना के लिए युवक नहीं मिल रहे थे... गांधी ने भारत के युवकों को यह कह कर बरगलाया की अगर इस समय साम्राज्य की सेवा की जाएगी तो हो सकता है अंग्रेज हमें आजाद कर दें. एनी बेसेंट ने इसका विरोध किया और कहा की भारत अपने पुत्रों- पुत्रियों के खून का सौदा नहीं करता!

इस युद्ध में 1 लाख भारतीय सैनिक यरोप में मारे गए जिन्हें अपने वतन की मिटटी भी नसीब नहीं हुयी! पंजाब में तो जबरन भर्ती के कारण जनसंख्या अनुपात ही बिगड़ गया.

इसका इनाम भारत को मिला वो आजादी नहीं बल्कि **'जलियाँ वाला बाग़ काण्ड'** था.

गांधी जी देश को स्वतंत्र कराने के लिए बार-बार आन्दोलन चलाते थे, पर अंग्रेजो को मुसीबत में देखकर आंदोलन वापिस ले लेते थे। अतः उनकी इस नीति के कारण लाला-लाजपतराय, सुभाष चन्द्र बोस, भगतसिंह, मदनमोहन मालवीय जैसे क्रांतिकारी व अहिंसावादी भी उनसे अलग हो गये। यहां तक कि अपने हिन्दू पूर्वजों पर गर्व करने वाला मोहम्मद अली जिन्ना जैसा राष्ट्रवादी व्यक्ति भी कट्टर अलगाववादी मुसलमान बन गया।

गांधीजी "भारत छोड़ो आंदोलन" से पूर्व तक कांग्रेस के **"डोमिनियन स्टेट"** की मांग से ही संतुष्ट थे और पूर्ण स्वराज्य की मांग के इस आंदोलन को भी 1942 के दो वर्ष बाद ही 1944 में जेल से छोड़े जाने पर वापस ले लिया था।

1946 में नोआखाली (आज के बंग्लादेश में) में केवल 24 घंटे में ही मुसलमानों ने जब 50 हजार हिंदुओं को मार डाला था तो वहां शांति प्रयास के लिए गांधी गए थे।

गिरिजा कुमार द्वारा लिखित 'महात्मा गांधी और उनकी महिला मित्र' पुस्तक को पढने पर लगता है कि वह नोआखाली में भी महिलाओं के साथ नग्न सोने का अपना ब्रहमचर्य प्रयोग जारी किए हुए थे। यहां तक कि अपने चाचा की पौत्री मनु गांधी को वहां उसके पिता को पत्र भेजकर विशेष रूप से बुलवाया गया और उन्हें दूसरे गांव में रहने के लिए भेज दिया ताकि गांधी निर्वस्त्र मनु गांधी के साथ सो सकें।

मनु गांधी की उम्र उस समय केवल 19 वर्ष थी। सरदार पटेल गांधी के इस कृत्य से इतने क्रोधित हुए कि उन्होने खुल्लमखुल्ला कह दिया कि स्त्रियों के साथ निर्वसन सोकर बापू अधर्म कर रहे हैं। पटेल के गुस्से के बाद बापू इसकी स्वीकृति लेने के लिए बिनोवा भावे, घनश्याम दास बिड़ला, किशोरलाल आदि को इसके पक्ष में तर्क देने लगे, लेकिन कोई भी इतनी मारकाट के बीच पौत्री के साथ उनके नग्न सोने का समर्थन नहीं कर रहा था। फिर गांधी जी ने एक दाव खेला।

नोआखाली मे एक तरफ जब मुसलमान हिंदुओं की हत्या कर रहे थे तो गांधी ने अपनी पौत्री के साथ ब्रहमचर्य प्रयोग को सही ठहराने के लिए सार्वजनिक भाषण में **इस्लाम के पैगंबर मुहम्मद का उदाहरण** देने लगे। उन्होंने कहा कि अपनी पौत्री के साथ स्वेच्छा से ब्रहमचर्य यज्ञ कर के वह **'खुदा का खोजा'** बन गए हैं।

गांधी अपने ब्रहमचर्य प्रयोग के लिए उस रक्त रंजित जगह पर दूध पीने के लिए अपनी बकरी भी ले गए थे, जिसे गुस्साए मुसलमानों ने चुरा लिया और उसे हलाल कर उसका मांस खा लिया था। सार्वजनिक रूप से पटेल द्वारा लांछन लगाने को गांधी कभी नहीं भूल पाए।

माना जाता है कि 1946 में जब पूरी कांग्रेस ने सरदार पटेल को आगामी प्रधानमंत्री बनाने के लिए समर्थन किया तो गांधी ने नेहरू का नाम आगे बढ़ा कर पटेल से अपने नोआखाली के अपमान का बदला लिया।

नेहरूवादी और साम्यवादी इतिहासकारों ने पटेल को दक्षिणपंथी और नेहरू को उदारपंथी साबित कर गांधी के इस निर्णय को सही ठहरा कर पूरे सच को छुपा लिया है। न जाने हमारे देश के इतिहास में क्या क्या छुपा पड़ा है। हमें आवश्यकता है सत्य को खंगालने की ....

कभी ब्रिटिश फौज की कमान भी संभाली थी गाँधीजी ने....!

नई दिल्ली। 'अहिंसा का पुजारी फौजी वर्दी में' और वह भी उस देश की फौज में जिसके साम्राज्य के पतन का बीड़ा उन्होंने खुद जीवनभर उठाए रखा। यह बात यकीन से परे लगती है लेकिन महात्मा गाँधी से जुड़े इस तथ्य को रक्षा मंत्रालय ने नए सिरे से उजागर किया है, जिसके बारे में अभी तक ज्यादातर लोगों को जानकारी नहीं थी। रक्षा मंत्रालय ने ब्रिटिश फौज की वर्दी पहने श्री मोहन दास करमचंद गाँधी के चित्र भी प्रकाशित किए हैं।

रक्षा मंत्रालय से निकलने वाली पत्रिका 'सैनिक समाचार' के आगामी 2 जनवरी 2009 को सौ साल पूरा होने के उपलक्ष्य में एक स्मारिका प्रकाशित की जा रही है जिसमें इतिहास के अनेक दुर्लभ तथ्यों के बीच एक हैरततंगेज बात यह भी सामने आई है कि महात्मा गाँधी 1889 में ब्रिटिश सेना में शामिल हुए थे और उन्होंने इसकी एम्बुलेंस यूनिट में काम किया था। अफ्रीका में अँगरेज़ बोएर जंग की समाप्ति पर मोहनदास करमंचद गाँधी को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए पदक से भी सम्मानित किया गया था। स्मारिका में प्रकाशित लेख के अनुसार महात्मा गाँधी का फौज में शामिल होना और उन्हें फौजी के तौर पर स्वीकार कर लेना ब्रिटिशों के लिए कठिन फैसला था लेकिन परिस्थितियों ने ऐसा होने के लिए बाध्य कर दिया।

क्यों शामिल हुए फौज में?

महात्मा गाँधी ब्रिटिश फौज में क्यों शामिल हुए? इसकी सच्चाई के बारे में सैनिक समाचार की शताब्दी स्मारिका में कहा गया है कि बोएर के दो गणराज्यों में ब्रिटिशों से आजादी के लिए जब जंग छिड़ी तो वहाँ अँगरेज कमजोर स्थिति में थे और अफ्रीकी बोएर की
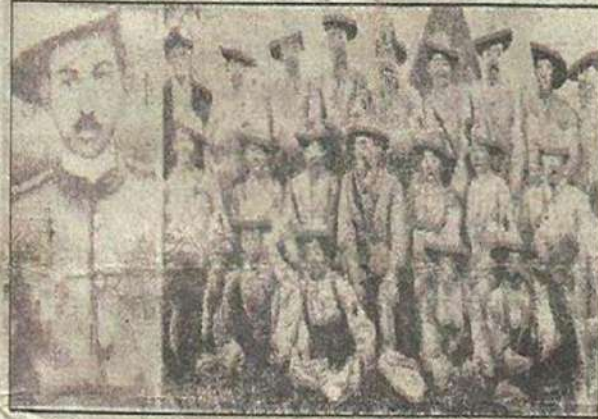
ब्रिटिश सेना की एम्बुलेंस यूनिट में मोहनदास करमचंद गाँधी।

48000 की फौज के सामने उनके पास महज 27 हजार फौजी ही थे ऐसे में ब्रिटिशों को अपने सर्वश्रेष्ठ जनरलों को लड़ाई में उतारना पड़ा। इसी दौरान मोहनदास करमचंद गाँधी ने एम्बुलेंस यूनिट के गठन की बात सोची थी। उस समय भारतीयों और ब्रिटिशों के कंधे से कंधा मिलाकर लड़ने की बात सोची भी नहीं जा सकती थी। लेकिन आखिरकार इस यूनिट का गठन हो गया।

शौर्य गाथाएँ रच दी

महात्मा गाँधी जिस एम्बुलेंस यूनिट में थे उसमें 1100 भारतीय थे जिनमें 800 गिरमिटिया मजदूर थे। इस यूनिट ने बेहद बहादुरी से काम किया था। और ब्रिटेन की सेना के कमांडर इन चीफ ने उनके शौर्य की गाथाएँ दर्ज की थीं। इस यूनिट के फौजी 25 मील पैदल चलकर नवनियुक्त सुप्रीम कमांडर लार्ड राबर्ट के बेटे का शव उठाकर लाए थे।-वार्ता

गांधी के झूठ की कथा

----

1. गाँधी का झूठ - '**ब्रह्मचर्य के प्रयोग**'

अपने ब्रह्मचर्य की परीक्षा के लिए वे महिलाओं के साथ एकांतवास करते थे, स्वयं निर्वस्त्र होकर उनसे अपने शरीर की मालिश कराते थे और लड़कियों को निर्वस्त्र करके अपने साथ सुलाते थे। ऐसा उन्होंने स्वयं अपनी आत्मकथा में लिखा है। इन प्रयोगों द्वारा गाँधी के ब्रह्मचर्य की परीक्षा तो हो जाती होगी, परन्तु उन महिलाओं के ब्रह्मचर्य का क्या होता था? सरदार पटेल ने भी उनसे ऐसे प्रयोगों को बन्द करने का आग्रह किया था, परन्तु वे नहीं माने।

सच्चाई - 'ब्रह्मचर्य के प्रयोग' के बजाय 'सेक्स के प्रयोग' हुआ करते थे ...इनकी पुस्तक का नाम "सत्य के प्रयोग" की बजाय "सेक्स के प्रयोग" होना चाहिए। क्योंकि गांधी प्राचीन वाममार्गी तांत्रिकों के पथ, जो स्त्री को नग्न करके उसे भैरवी की उपाधि देते हैं, और उस नग्न स्त्री के साथ ब्रह्मचर्य की साधना (नग्न होने के बाद भी मन में कामुक विचार न आयें, वासना न उत्पन्न हो) करके ईश्वर प्राप्ति के प्रयोग किया करते हैं, पर चलकर अपने अन्दर चमत्कारिक शक्तियाँ विकसित करना और 125 वर्ष जीवित रहना चाहते थे।

अब आपलोगों के मन में अगर ये बात आ रही होगी कि ये परीक्षण तो वो अपनी पत्नी पर भी कर सकते थे तो ये बताने की जरुरत नहीं है कि कस्तुरबा जी उनसे उम्र मे 1 साल की बडी थीं तो आपलोग अंदाजा लगा सकते हैं कि गाँधी के 30 बरस पूरे होते-होते कस्तुरबा जी का आकर्षण खत्म होने को होगा और गांधी अपनी पत्नी से अक्सर मारपीट करते थे। उन्होंने दशकों तक उनके साथ शारीरिक संबंध भी नहीं रखे।

एक बात और कि गाँधी जी को शुरु से ही शर्म आती थी कस्तूरबा जी को अपनी पत्नी कहने में...जब वो करीब 18-20 की उम्र में इंगलैण्ड गए थे वकालत की शिक्षा प्राप्त करने तो वहाँ पर इन्हें अपने कस्तूरबा के पति होने पर इतनी शर्म आयी कि इस सत्य के देवता को भी झूठ कहना पड़ गया..इन्होंने सबसे यही कहा कि ये अ भी कुँवारे ही हैं..अपने आप को कुँवारा कहने के पीछे इनका एक स्वार्थ तो ये भी रहा होगा कि वहाँ की गोरी- गोरी लड़कियाँ इनके पास आने के लिए अपना रास्ता साफ़ (clear) समझें पर ऐसा कुछ हुआ

नहीं...इनको अविवाहित जानकर भी कोई लड़की इनके करीब नहीं आई तब आ गए ये रास्ते(लाईन) पे और फ़िर अपने सच्चरित्र का ढोल पीटने लगे......

गांधी ने ब्रह्मचर्य के नाम पर काफी प्रयोग किये, अंततः वासना से मुक्त होने में असफल रहें, और 51 वर्ष की आयु में गांधी, कवि रविन्द्र नाथ टैगोर की भांजी सरला देवी से दूसरा विवाह करने की इच्छा व्यक्त करने लगे, लेकिन यहाँ पर भी परिवार का विरोध झेलना पड़ा और दूसरे विवाह की इच्छा, केवल इच्छा ही बनकर रह गयी।

2. गाँधी का झूठ -'सादा जीवन उच्च विचार' गाँधी गरीबी में रहने का पाखंड करते थे। वे गरीबों की तरह रेल में तीसरी श्रेणी में यात्रा करते थे। लेकिन उनके लिए उनके चेले पूरा डिब्बे पर कब्जा कर लेते थे। इस गुंडागर्दी का गाँधी विरोध नहीं करते थे और अपनी सुविधा के लिए यह मान लेते थे कि उनके लिए जनता ने खुद डिब्बा खाली छोड़ दिया है। वे बकरी का दूध पीते थे, इसलिए हर जगह बकरी उनके साथ ही जाती थी। वे इस बात की चिंता नहीं करते थे कि इस दिखावे पर कितना खर्च होगा।

सच्चाई - सरोजिनी नायडू ने एक बार स्पष्ट स्वीकार किया था कि गाँधी को गरीब बनाये रखने में हमें बहुत धन खर्च करना पड़ता है। क्या अधिक धन खर्च कराते हुए भी गरीबी में रहने का दिखावा करना पाखंड नहीं है?

3. गाँधी का झूठ - दूध गाय या भैंस के थनों को खींचकर निकाला जाता है, इसलिए पशुओं के प्राप्त होने के कारण माँसाहार की श्रेणी में आता है। गाँधी अंडे को शाकाहारी मानते थे, क्योंकि अंडे मुर्गी स्वयं देती है। खैर, दूध के बिना काम न चलने पर उन्होंने गाय या भैंस की जगह बकरी का दूध पीना शुरू कर दिया।

क्या बकरी का दूध निकालने के लिए उसके थनों को नहीं खींचा जाता? क्या बकरी अपना दूध मूत्र की तरह स्वयं निकालती है? क्या गाँधी की परिभाषा के अनुसार बकरी का दूध माँसाहार नहीं है?

4.गाँधी मरने की बार-बार प्रतिज्ञा लेकर भी क्यों नहीं मरा ?

1921 में सत्याग्रह शुरू करते समय उसने कहा था कि अगर मैंने एक साल में स्वराज ना लिया तो मेरी लाश समुद्र पर तैरती नजर आयगी । स्वराज्य नहीं मिला, मगर गाँधी जीवित रहा ।

नमक सत्याग्रह में डाँडी को मार्च करते समय घोषणा की थी कि अगर मैं सफ़ल ना हुआ तो साबरमती आश्रम में वापस नहीं आऊँगा । गाँधी असफ़ल रहा और साबरमती लौटने की बजाय सेवाग्राम नाम का दूसरा आश्रम बसा लिया । क्या यह उसकी प्रतिज्ञा की आत्मा का हनन नही था? क्या यह गोमाता के दूध की बजाय बकरी का दूध पीने की तरह उसकी प्रतिज्ञा के मात्र अक्षर का पालन नहीं था?

फ़िर इसी गाँधी ने ऐलान किया था कि पाकिस्तान बना तो मेरी लाश पर बनेगा । क्या हुआ सभी जानते हैं, पाकिस्तान बना, मगर गाँधी जीवित ही रहा । पाकिस्तान बना, लाशों पर ही बना पर वो लाशें निरीह, निरअपराध हिन्दुस्तानी सर्वसामान्य जनमानष की थीं । यह इस देश का दुर्भाग्य नहीं तो क्या ?

5.कहा जाता है कि गांधी दक्षिण अफ्रीका पैसा कमाने और प्रसिद्धि के लिये गये थे। दक्षिण अफ्रीका जाने से पहले उन्होंने अपना भाग्य अजमाया था लेकिन वकालत में सफल नहीं हो पाये। उन्होंने अब्दुलाह एंड कं0 का प्रतिनिधित्व किया जो अवैध व्यापार में शामिल था। गांधी ने भारी भारकम फीस वसूली।

6. द्वितीय विश्व युद्ध मे गाँधी ने भारतीय सैनिको को ब्रिटेन का लिए हथियार उठा कर लड़ने के लिए प्रेरित किया , जबकि वो हमेशा अहिंसा का ढोल बजाते है।

7. अमृतसर के जलियाँवाला बाग़ गोली काण्ड (1919) से समस्त देशवासी आक्रोश में थे तथा चाहते थे कि इस नरसंहार के खलनायक जनरल डायर पर अभियोग चलाया जाए। गाँधी ने भारतवासियों के इस आग्रह को समर्थन देने से मना कर दिया था , कारण ऐसा नराधम नीच जनरल डायर को दंड देने में भी गांधी को हिंसा की बू आती थी ।

8.जलियाँवाला बाग हत्याकांड के लिए जिम्मेदार गवर्नर माइकेल- ओड- वायर की हुतात्मा सरदार ऊधमसिंह द्वारा हत्या किये जाने पर गाँधी की प्रतिक्रिया थी -" ***मेरी तरह हर भारतीय को इस हत्या पर लज्जा अनुभव करनी चाहिए और उसे इस बात की खुशी होनी चाहिए कि अन्य तीन प्रतिष्ठित अंग्रेजो की जान बच गयी।***

9.16 दिसम्बर 1895 को दक्षिण अफ्रीका के प्रत्येक अंग्रेज के नाम अपील में गाँधी ने कहा - " ***यह सच हैं कि इंग्लेंड भारत पर राज कर रहा हैं परन्तु इस कि वजह से भारतीयों को कोई शर्म नही हैं.. बल्कि उन्हें गर्व हैं कि वे ब्रिटिश राजमुकुट की छत्रछाया में हैं क्योकि वे मानते हैं कि इंग्लेंड ही उनका मुक्तिदाता होगा"।***

10.जब प्रथम विश्वयुद्ध (1914 – 1918) **के दौरान भारतीय सैनिकों ने हजारों जर्मनों को मौत के घाट उतारा तो क्या गांधीजी ने हिँसा का पक्ष नहीँ लाया था ? परन्तु शायद वह हिँसा इसलिए नहीँ थी , क्योँकि वे सैनिक अंग्रेजोँ की सेना मेँ जर्मनोँ को मारने के लिए उन्होँने भर्ती कराये थे । विश्वयुद्ध के दौरान गांधीजी ने वायसराय चेम्स फोर्ड को एक पत्र भी लिखा था । पत्र मेँ उन्होँने लिखा था –** ***" मैँ इस निर्णायक क्षण पर भारत द्वारा उसके शारीरिक रूप से स्वस्थ पुत्रोँ को अंग्रेजी साम्राज्य पर बलिदान होने के रूप मेँ प्रस्तुत किये जाने के लिए कहूँगा । "***

11.भगत सिंह कि फांसी को रोकने के लिए आज़ाद ने ब्रिटिश सरकार पर दवाब बनाने का फैसला लिया इसके लिए आज़ाद ने गांधी से मिलने का वक्त माँगा लेकिन गांधी ने कहा कि वो किसी भी उग्रवादी से नहीं मिल सकते।

12. 23 **मार्च** 1931 **को भगत सिंह,सुखदेव और राजगुरु को फांसी दे दी गयी | पूरा देश इन वीर बालकों की फांसी को टालने के लिए महात्मा गांधी से प्रार्थना कर रहा था कि वह हस्तक्षेप कर इन देशभक्तों को मृत्यु से बचाएं, था लेकिन गांधी जी ने भगत सिंह की हिंसा को अनुचित ठहराते हुए देशवासियों की इस उचित माँग को अस्वीकार कर दिया।**

13.हुतात्मा सुखदेव ने स्पष्ट शब्दों मे गाँधी पर यह आरोप लगाया था –*"आप क्रान्तिकारी आन्दोलन को कुचलने में नौकरशाही का साथ दे रहे हैं ।"*

14.इर्विन से समझौते की बातचीत के दौरान गाँधी ने भगत सिंह और उनके साथियों को फ़ाँसी से बचाने के लिये क्या प्रयत्न किये, इस बारे में बहुत सी अफ़वाहें फ़ैली हुई हैं । लेकिन राष्ट्रीय लेखागार की फ़ाइलों से कुछ नये तथ्य प्रकाश में आये हैं, जिन्हे मन्मथनाथ गुप्त ने 'नवनीत' में प्रकशित अपने लेख में उद्धृत किया है । इर्विन ने अपने रोजनामचे में लिखा है –

"दिल्ली मे जो समझौता हुआ, उससे अलग और अन्त में मिस्टर गाँधी ने भगत सिंह का उल्लेख किया, उन्होंने फ़ाँसी की सजा रद्द करने के लिये कोइ पैरवी नही की, साथ ही उन्होंने वर्तमान परिस्थितियों में फ़ाँसी को स्थगित करने के बिषय में भी कुछ नही कहा ।" (फ़ाइल नं 5-45/1931 KW-2 गृहविभाग राजनीतिक शाखा)

20 मार्च को गाँधी वायसराय के गृह-सदस्य हर्बर्ट इमरसन से मिला। इमरसन ने भी रोजनामचे में लिखा है- *"मिस्टर गाँधी की इस मामले में अधिक दिलचस्पी नही मालुम हुई। मैंने उनसे यह कहा कि वह सबकुछ करें ताकि अगले दिनों में सभाएँ न हों और लोगो के उग्र व्याख्यानों को रोकें। इस पर उन्होंने अपनी स्वीकृति दे दी और कहा जो कुछ भी मुझसे हो सकेगा मैं करुँगा।" (फ़ाइल नं 33-1/1931)*

क्या अर्थ हो सकता है इसका, इस बात के अतिरिक्त कि गाँधी ने स्वयं अपरोक्ष रूप में ब्रिटिश सरकार का सहयोग किया, हमारे महान क्रान्तिकारी भगत सिंह और उनके साथियों को फ़ाँसी दिलाने में। अगर गाँधी चाहते तो शायद भगत सिंह और उनके साथियों को फ़ाँसी न हुई होती। मगर उसने फ़ाँसी रोकने के लिये प्रयत्न करना तो दूर, स्थिति को सरकार के अनुकूल बनाए रखने में ब्रिटिश सरकार का सहयोग किया।

15.भगतसिंह को फांसी दिए जाने पर अहिंसा के महान पुजारी गांधी ने कहा था, "हमें ब्रिटेन के विनाश के बदले अपनी आजादी नहीं चाहिए।" और आगे कहा, "अगर इन नौजवानों को फाँसी पर लटकाना ही हैं तो कांग्रेस अधिवेशन के बाद ऐसा करने के बजाय उससे पहले ठीक होगा। इससे लोगों के दिलों में झूठी आशाएं नहीं बंधेगी।"

अर्थात् गांधी की परिभाषा में किसी को फांसी देना हिंसा नहीं थी।

16. इसी प्रकार एक ओर महान् क्रान्तिकारी जतिनदास को जो आगरा में अंग्रेजों ने बलिदान किया तो गांधी आगरा में ही थे और जब गांधी को उनके पार्थिक शरीर पर माला चढ़ाने को कहा गया तो उन्होंने साफ इनकार कर दिया अर्थात् उस नौजवान द्वारा खुद को देश के लिए कुर्बान करने पर भी गांधी के दिल में किसी प्रकार की दया और सहानुभूति नहीं उपजी, ऐसे थे हमारे अहिंसावादी गांधी।

17.गांधीजी ने अहिंसा को अति महिमामंडित किया पर उसे राजनीति में घुसेडने का क्या परिणाम हुआ ? उत्तर पश्चिम में पश्चिमी पाकिस्तान , पूर्व मे एक और पाकिस्तान (बांग्लादेश) , कश्मीर में एक और पाकिस्तान , केरल , पश्चिम बंगाल , असम और उत्तर प्रदेश में कई छोटे छोटे स्थानीय पाकिस्तान ?

गांधी की अहिंसा की परिभाषा ने लाखों लोगों को हिंसा और महिलाओं को बलात्कार की वेदी पर चढ़ा दिया।

18.गांधी ने अपने जीवन में तीन आन्दोलन (सत्याग्रह) चलाए और तीनों को ही बीच में वापिस ले लिया गया फिर भी लोग कहते हैं कि आजादी गांधी ने दिलवाई ।

19.इससे भी बढ़कर जब देश के महान सपूत उधमसिंह ने इंग्लैण्ड में माईकल डायर को मारा तो गांधी ने उन्हें पागल कहा इसलिए नीरद चौधरी ने गांधी को दुनियां का सबसे बड़ा सफल पाखण्डी लिखा है ।

20.इस आजादी के बारे में इतिहासकार सी. आर. मजूमदार लिखते हैं – "भारत की आजादी का सेहरा गांधी के सिर बांधना सच्चाई से मजाक होगा । यह कहना उसने सत्याग्रह व चरखे से आजादी दिलाई बहुत बड़ी मूर्खता होगी ।

इसलिए गांधी को आजादी का 'हीरो' कहना उन सभी क्रान्तिकारियोंका अपमान है जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपना खून बहाया ।"

यदि चरखों सेआजादी की रक्षा सम्भव होती है तो बार्डर पर टैंकों की जगह चरखे क्यों नहीं रखवा दिए जाते?

21.1928 **ई. में जब कांग्रेस की ओर से नेहरू रपट तैयार की गई। इसमें भारत के भावी संविधान में गांधीजी** के समर्थन से **'डोमिनियन स्टेटस'** की मांग की गई। सुभाष ने पूरी स्वतंत्रता के प्रस्ताव का दबाव बनाया पर गांधीजी का उन्हें समर्थन नहीं मिला। 1928 के कोलकाता अधिवेशन में भी सुभाष की एकमात्र आवाज भारत की पूर्ण स्वतंत्रता की मांग रही थी। 1929 का कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन कांग्रेस के इतिहास में एक राजनीतिक छलावा, एक भ्रमजाल तथा एक नाटक था। पं. नेहरू जी के नेतृत्व में पूर्ण स्वराज्य अर्थात पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा मंच से की गई थी। **सुभाष बोस ने पूर्ण स्वराज्य का अर्थ अंग्रेजों से पूर्ण संबंध विच्छेद करके स्वतंत्रता से जोड़ने को कहा। परंतु गांधीजी ने इसे स्वीकार न किया। परंतु 9 जनवरी 1930 के हरिजन में पूर्ण स्वराज्य का अर्थ 'डोमिनियन स्टेटस' ही स्वीकार किया।** इतिहास का यह आश्चर्यजनक तथ्य है कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने पूर्ण स्वतंत्रता का कभी लक्ष्य ही नहीं रखा (देखें सतीशचन्द्र मित्तल, कांग्रेस : अंग्रेज भक्ति से राजसत्ता तक, नई दिल्ली, 2011)

22.वीर सावरकर पहले ऐसे नेता थे , जिन्होंने स्वदेशी की चेतना जगाने के लिए पुणे में (07**अक्टूबर** 1905 **में) विदेशी वस्त्रों की होली जलाकर लोगों को विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार करने को कहा था । तिलक एवं परांजये जी ने भी इसका समर्थन किया। मोहनदास करमचंद गांधी ने उनकी आलोचना यह कहते हुए की**

थी कि यह काम घृणा एवं हिंसा पर आधारित हैं।यह एक अलग बात हैं कि इसके 17 **वर्ष बाद** 21 **नवम्बर** 1921 **में अपने भारतीय व्यापारी मित्रों के आर्थिक** हितों **की रक्षा व मुस्लिम तुष्टिकरण के आंदोलन खिलाफत या असहयोग आन्दोलन के समय स्वयं गांधी ने विदेशी वस्त्रों की होली जलाई।**

23.लोकमान्य तिलक के **प्रभाव** को हल्का करने के लिए और कांग्रेस पर कब्जे के लिए कट्टर **पंथी मुस्लिमों** के साथ **'खिलाफत असहयोग आन्दोलन** 'चलाया और 'सेक्युलरिज्म'**की नयी** परिभाषा गढ़ी **गयी गांधी द्वारा!**

24.मोहम्मद अली जिन्ना आदि राष्ट्रवादी **नेताओं के विरोध को अनदेखा करते हुए** 1921 **में गाँधी ने खिलाफ़त** आन्दोलन **को समर्थन देने की घोषणा** की। **तो भी केरल के मोपला में मुसलमानों** द्वारा **वहाँ के हिन्दुओं** की मारकाट की **जिसमें** लगभग 1500 **हिन्दु मारे गए व** 2000 **से अधिक को मुसलमान बना लिया गया। गाँधी ने इस हिंसा का विरोध नहीं किया,** वरन् **खुदा के बहादुर बन्दों की बहादुरी के रूप में वर्णन किया।**

25.1926 **में आर्य समाज** द्वारा चलाए गए **शुद्धि** आन्दोलन **में** लगे महान देशभक्त **एवं क्रांतिकारी स्वामी श्रद्धानंद** की हत्या की **हत्या अब्दुल रशीद नामक** एक **मुस्लिम आतंकवादी ने कर दी, इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप गाँधी ने अब्दुल रशीद को अपना भाई** कह कर **उसके इस कृत्य को** उचित ठहराया **व** शुद्धि **आन्दोलन** को **अनर्गल** राष्ट्र-विरोधी तथा हिन्दु-मुस्लिम एकता के लिए **अहितकारी** घोषित **किया। स्वामी श्रद्धानंद व राजपाल की हत्या में गांधी की भूमिका** संदेहस्पद **हैं।**

26. मिस्टर गांधी **ने केरल के मोपल्ला में** हिन्दू **नरसंहार** के हत्यारों **को 'धर्मनिष्ठ' संबोधित** किया था ।

27. **अली बंधूओ ने जब अफगानिस्तान के** आमीर(राजा) **को भारत पर हमला करने को कहा तब गाँधी ने पूरी** सहमति दी ये कह के जैसे हम **मुगलो** के प्रति वफादार रहे **हैं आपके** प्रति **भी रहेंगे** | देश कि खुशकिस्मती के **ब्रिटिश** सी आई डी ने चिठ्ठी पकड़ ली |

28.किसी भी दृष्टि से देखा जाए तो यह स्पष्ट है कि इस देश की राष्ट्रभाषा बनने का अधिकार **हिन्दी** को है । **गांधीजी ने अपने** राजनीतिक कैरियर की शुरुआत **में हिन्दी को** बहुत **प्रोत्साहन** दिया । **लेकिन जैसे ही** उन्हें पता चला कि **मुसलमान** इसे पसन्द **नही** करते, तो वे उन्हें **खुश** करने के लिए **हिन्दुस्तानी** का प्रचार

करने लगे । बादशाह राम, बेगम सीता और मौलवी वशिष्ठ जैसे नामों का प्रयोग होने लगा । मुसलमानों को खुश करने के लिए हिन्दुस्तानी (फारसी लिपि में लिखे जाने वाली उर्दू भाषा) स्कूलों में पढाई जाने लगी ।

29. भारत-पाकिस्तान विभाजन का समर्थन करने वाली दिल्ली की 'जामिया मिलिया इस्लामिया' संस्था की स्थापना स्वयं मिस्टर गांधी ने 1925 में की थी ।

30."वन्दे मातरम" गाने पर प्रतिबन्ध ----1905 के भारत विभाजन विरोध के आंदोलन के दौरान " वन्दे मातरम" ने जनमानस को जोड़ने का काम किया । अंग्रेज़ों को इस गान का ज्यादा मतलब तो समझ नहीं आया लेकिन वे इतना समझ गए कि इस गान का मातृभूमि के प्रति वंदना से कोई सन्दर्भ है।

1908 अंग्रेज़ सरकार ने ज्यों ही इसे प्रतिबंधित किया त्यों ही ये गान और ख्याति प्राप्त करने लगा। आम जनसभाओं में और कांग्रेस के सभी अधिवेशनों में गया जाने लगा। इन्ही अधिवेशनों में जब यह गान गया गया तो एक मुस्लिम ने गांधी के समक्ष यह आपत्ति दर्ज़ की कि यह उनके धर्म के विरुद्ध है,

गांधी ने पूरे देश की भावनाओं को ताक पर रख कर एक मुसलमान को इस गान का मतलब समझने की बजाये यह आदेश पारित कर दिया की अब से " जन गण मन ...... गया जाये तथा "वन्दे मातरम" सभाओं में प्रतिबंधित कर दिया।

31."शिवा बावनी" कविता पर प्रतिबन्ध --- 52 छंदों की यह कविता जो हिन्दुओं को उनका गौरव याद दिलाने तथा हिन्दुओं को जोड़ने का एक बेहतरीन काम कर रही थी , "शिवा बावनी" में एक छंद हैं की यदि शिवाजी न होते तो सारा देश मुस्लमान हो जाता -

"कुम्करण असुर अवतारी औरंगजेब, कशी प्रयाग में दुहाई फेरी रब की ।
तोड़ डाले देवी देव शहर मुहल्लों के, लाखो मुसलमाँ किये माला तोड़ी सब की ।
"भूषण" भणत भाग्यो काशीपति विश्वनाथ । और कौन गिनती में भुई गीत भव की ।
काशी कर्बला होती मथुरा मदीना होती । शिवाजी न होते तो सुन्नत होती सब की ।

मुसलमानो को खुश करने के लिए गांधी ने इस कविता पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया।

32. कॉग्रेस के ध्वज निर्धारण के लिए बनी समिति (1931) ने सर्वसम्मति से भगवा वस्त्र पर निर्णय लिया किन्तु गाँधी कि जिद के कारण उसे तिरंगा कर दिया गया।

33.राष्ट्र ध्वज का अपमान --- आज़ादी से पहले इस तिरंगे ने न हिन्दू औरतों को बलात्कार से बचाया न ही हिन्दू मंदिरों को खंडित और अपवित्र होने से बचाया। इसी तिरंगे का अपमान महात्मा गांधी ने खुद तब किया,जब 1946 में नौखली के दंगों के दौरान उनके तम्बू पर लगे इस झंडे को देख कर "एक" मुसलमान ने इस पर आपत्ति दर्ज़ की तो उन्होंने करोड़ों देशवासियों की भावनाओं को ताक पर रख कर,बिना किसी प्रतिरोध के उस झंडे को अपने तम्बू पर से उतरवा दिया।

34.1938 ई. का कांग्रेस अधिवेशन ताप्ती नदी के तट पर हरिपुर में हुआ। इसमें पहली बार सुभाष बोस को कांग्रेस के इक्यानवे वर्ष का अध्यक्ष बनाया गया। सुभाष ने अपने भाषण में भारत को मुख्य विषय बनाया। आर्थिक संरचना की योजना रखी। कांग्रेस के ढांचे को प्रजातांत्रिक बनाने को कहा। इसके साथ ही स्वतंत्रता प्राप्ति की एक निश्चित तारीख तय करने को कहा, इससे गांधीजी के साथ टकराव भी बढ़ा। सुभाष, गांधी जी को अपना प्रतिद्वंदी लगने लगे। उन्हें कांग्रेस में अपनी 'सुपरप्रेसीडेंट' की गरिमा को खतरा लगा। अत: 1939 के चुनाव के लिए उन्होंने अपना प्रतिनिधि पट्टाभि सीतारमैय्या को खड़ा कर दिया। गांधीजी की आशा के विपरीत उनका व्यक्ति 203 मतों से पराजित हो गया। गांधीजी ने अपनी व्यक्तिगत हार मानी। समूचे देश में समाचार तेजी से फैल गया। गांधीजी ने इस पराजय को अपनी प्रतिष्ठा का विषय बना लिया। त्रिपुरा (मध्य प्रदेश) में बीमारी की अवस्था में सुभाष ने अधिवेशन में भाग लिया। उन्होंने एक लेख भी लिखा जिसमें उन्होंने विष देने की आशंका भी व्यक्त की। (देखें, सुभाष का लेख माई स्ट्रेन्ज इलनैस माडर्न रिव्यू, कोलकाता, अप्रैल 1939) गांधीजी नियंत्रित 15 कार्यकारिणी के सदस्यों में से 13 ने त्यागपत्र दे दिया तथा उनके साथ कार्य करने से इंकार कर दिया। आखिर सुभाष ने इस्तीफा दे दिया।

35.गांधी ने कहा यदि रमैया चुनाव हार गया तो वे राजनीति छोड़ देंगे लेकिन उन्होंने अपने मरने तक राजनीति नहीं छोड़ी जबकि रमैया चुनाव हार गए थे। इस घटना ने सिद्ध कर दिया था गांधी के ना तो कोई नियम थे, ना सिद्धांत और ना ही वो स्वयं सर्वमान्य नेता थे और न उनकी नीतियाँ ही।

36.गांधी ने न केवल नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को कांग्रेस से बाहर निकालने के लिये भूख हड़ताल की बल्कि गांधी ने ब्रिटिश सरकार को यहाँ तक वादा किया था कि अगर वे बोस को पाते है तो वे प्राधिकारियों को समर्पित कर देंगे।

बेचारे नेताजी देश-विदेश समर्थन के लिए भटकते रहे जबकि उनके देश में गाँधी सहयोग नहीं दिया ...कितनी बढ़ी विडम्बना है..सोचिये नेताजी सुभाष यदि इस देश को नेतृत्व देते तो शायद हमें सम्पूर्ण आजादी मिलती....

37.इसी प्रकार गांधी ने कहा था, "पाकिस्तान उनकी लाश पर बनेगा" लेकिन पाकिस्तान उनके समर्थन से ही बना। ऐसे थे हमारे सत्यवादी गांधी।

38.गांधी ने हिंदुह्रदय सम्राट छत्रपति शिवाजी महाराज आदि को पथभृष्ट कहा था। गांधी ने कट्टर मुसलमानो के तुष्टीकरण के लिए , उनकी वाह वाही के लिए, अनेक अवसरों पर भारत के राष्ट्रीय वीरो , महापुरुषों , गुरु गोविंद सिंह , महाराणा प्रताप, राजा रंजीत सिंह को पथभ्रष्ट देशभक्त कहकर उनका घोर अपमान किया।

39.जिस देश की संस्कृति में श्री राम और श्री कृष्ण को भगवान माना जाता हैं तथा हम भारतीय उनको अपना आदर्श मानकर उनके उज्जवल चरित्र से प्रेरणा लेते हैं परन्तु हमारे सेक्युलर गाँधी वर्ग विशेष को सन्तुष्ट करने के लिए भारतीय संस्कृति को अपमानित करते हुए लिखते हैं कि...

"मैं राम और कृष्ण का नाम नहीं लेता क्योंकि वे ऐतिहासिक पुरूष नहीं थे, किन्तु मैं अबूबकर और उमर का नाम लेने को बाध्य हूँ।" [हरिजन-- 26/7/1937]

इसी प्रकार एक अन्य स्थान पर भी गाँधी लिखते हैं कि...

"महाभारत के कृष्ण कभी भूमण्डल पर नहीं हुए।" [तेज-- 5/10/1924]

40.अक्तूबर 1938 में हैदराबाद दक्षिण के निजाम उस्मान अली के अत्याचारी शाशन के विरुद्ध सिक्खो और हिन्दुओ के संघर्ष को समर्थन देने से गांधी मना कर दिया।

41.1939 **में निजाम हैदराबाद ने सत्यार्थ प्रकाश पर तथा मठ –मंदिरो में पूजा करने पर प्रतिबंध लगा दिया था । गांधी इसी निजाम की क्रूरता का विरोध करने के वजाय , निजाम और मुसलमानो का पक्ष लेते** हुये राजकुमारी अमृत कौर को लिखा " ***में माननीय निजाम व मुसलमानो को दुखी नहीं करना चाहता था*** "

42.मिस्टर गांधी ने राष्ट्र के **टुकडे करने वाली 'मुस्लिम लीग' संस्था को 'महान संस्था' की उपाधि दी थी ।**

43. 6 **मई** 1946 **को** समाजवादी कार्यकर्ताओं **को अपने सम्बोधन में गाँधी ने मुस्लिम लीग** की हिंसा के **समक्ष अपनी आहुति देने की प्रेरणा दी।**

44.कानपुर में गणेश शंकर विद्यार्थी **को मुसलमानों ने निर्दयता** से मार दिया **था** महात्मा गांधी सभी **हिन्दुओं** से गणेश शंकर विद्यार्थी **की तरह अहिंसा के मार्ग पर चलकर बलिदान करने की बात** करते थे |

45. विश्वमें **सबसे बडा** निर्दयी, त्याज्य **एवं** भयानक **नरसंहार** (केवल **हिंदुओं** का) **करने** वाले **तथा मनुष्य को** (मन, **आचरण तथा संस्कार** से शुद्ध **हिंदुओं को** उनकी जन्मभूमि से) **पलायन करने** की **योजना** के **निर्माता** 'जिन्ना' को मिस्टर गांधी ने 'कायदे आजम' की उपाधि से एवं **नौखली** दंगों के हत्यारे "सोहरावर्दी " **के नेतृत्व में** लगातार **तीन दिन** की **हिंसा में** 75000 से **ज्यादा हिन्दू** मारे गए **थे** हज़ारों महिलाओं का अपहरण, बलात्कार हुआ था। और हज़ारों की तादाद में हिन्दुओं का ज़बरन धर्म परिवर्तन कराया गया **था।** हत्यारे सुहावर्दी **को मिस्टर गांधी ने** 'शहीद' की उपाधि प्रदान कर अलंकृत किया था |

46. ***गांधी हिन्दू मुस्लिम एकता की मृगतृष्णा के लिए मुसलमानों की हर नाजायज़ मांग के सामने समर्पण करते रहे,उन्हें छूट देते रहे और उनके समक्ष हथियार डालते रहे। कोई आश्चर्य नहीं कि यह तथाकथित,एकता न कभी आई और न कभी आ ही सकती थी।***

47.नोआखली के दंगे के **बाद** बिहार में **भयानक** दंगा हुआ **था।** 7 मार्च, 1947 **को** पटना **की प्रार्थना** सभा में गांधी **ने** अपने विचार प्रकट किए थे।- " ***हिन्दुओं को चाहिये कि अगर उनके बीच मुसलमानों का एक बच्चा भी आ जाय, तो वे उसे इस तरह प्यार करें, उसे इस तरह नहलायें-धुलायें, कपड़े पहनायें कि वह समझे कि हम अपने ही घर में हैं। ऐसा होगा तभी मुसलमान महसूस करेंगे कि हिन्दू हमारे दोस्त हो गये हैं।*** "

48.मिस्टर गांधी लगातार हिन्दू हितों की नज़रअन्दाज़ी करके मुस्लिम तुष्टिकरण में लगे रहे। यहाँ तक कि नौखली दंगों के सूत्रधार "सोहरावर्दी" को उसी तरह शहीद घोषित कर देना है जैसे कि कश्मीर में कर्नल राय के हत्यारे उग्रवादियों को "गिलानी" ने किया है। जैसे जैसे मुस्लिमों की नाज़ायज़ मांगें पूरी होती जातीं ,उनकी नयी मांगें आ जातीं ,और फिर गांधीजी की वही नेता बने रहने की चाह उन्हें नयी मांगों के सामने झुकने के लिए विवश कर देती।

49.गाँधी ने कश्मीर के हिन्दू राजा हरि सिंह से कहा कि कश्मीर मुस्लिम बहुल क्षेत्र है अतः वहां का शासक कोई मुसलमान होना चाहिए | अतएव राजा हरिसिंह को शासन छोड़ कर काशी जाकर प्रायश्चित करने | जबकि हैदराबाद के निज़ाम के शासन का गांधी जी ने समर्थन किया था जबकि हैदराबाद हिन्दू बहुल क्षेत्र था | गांधी जी की नीतियाँ धर्म के साथ, बदलती रहती थी | उनकी मृत्यु के पश्चात सरदार पटेल ने सशक्त बलों के सहयोग से हैदराबाद को भारत में मिलाने का कार्य किया | गांधी जी के रहते ऐसा करना संभव नहीं होता |

50. 1946 में काँग्रेस के अध्यक्ष पद पर वे सरदार पटेल के स्थान पर नेहरूजी को बैठाते हैं।

सन् 1946 में जो काँग्रेस का अध्यक्ष बनेगा, वही अगले साल स्वतंत्र भारत का पहला प्रधानमंत्री बनेगा- यह तय है। इसलिए इस बार अध्यक्ष चुनने से पहले काँग्रेस की 16 प्रान्तीय समितियों से प्रस्ताव मँगवाये जाते हैं। उम्मीदवार के रूप में एक तरफ नेहरूजी का करिश्माई व्यक्तित्व है, तो दूसरी तरफ सरदार पटेल का कर्मठ व्यक्तित्व। गाँधीजी पाँच साल पहले ही दोनों में से नेहरूजी को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर चुके हैं। इसके बावजूद परिपक्वता का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए 16 में से 13 प्रान्तीय समितियाँ सरदार पटेल का नाम प्रस्तावित करती हैं। वल्लभभाई पटेल का बहुमत से चुनाव सम्पन्न हुआ किन्तु गाँधी की जिद के कारण यह पद जवाहरलाल नेहरु को दिया गया...आगे नेहरु और उनके खानदान ने क्या दुर्गती किया उसका पाप अभी तक हम लोग चूका रहे है....

51..इंदिरा नेहरू का पिता जवाहर लाल नेहरू राजनीति की रंगरलियों में व्यस्त था और मां तपेदिक के स्विट्जरलैंड में मर रही थी. उनके इस अकेलेपन का फायदा फ़िरोज़ खान नाम के व्यापारी ने उठाया और लंदन में फिरोज खान से उसकी शादी हो गयी. इंदिरा की मां कमला नेहरू इस शादी से काफी नाराज़ थी जिसके कारण उनकी तबियत और ज्यादा बिगड़ गयी. नेहरू भी इस शादी से खुश नहीं था क्योंकि इससे

इंदिरा के प्रधानमंत्री बनने की सम्भावना खतरे में आ गयी. तो, ऐसे समय में मोहनदास गांधी ने फिरोज खान को समझाया और अपना उपनाम गांधी उसे दे दिया।. परन्तु इसका हिंदू धर्म में परिवर्तन के साथ कोई लेना -देना नहीं था. यह सिर्फ एक शपथ पत्र द्वारा नाम परिवर्तन का एक मामला था. और फिरोज खान फिरोज गांधी बन गया है, हालांकि यह बिस्मिल्लाह शर्मा की तरह एक असंगत नाम है. दोनों ने ही भारत की जनता को मूर्ख बनाने के लिए नाम बदला था.
जब वे भारत लौटे, एक नकली वैदिक विवाह जनता के उपभोग के लिए स्थापित किया गया था. इस प्रकार, इंदिरा और उसके वंश को काल्पनिक नाम गांधी मिला और फिरोज खान का पूरा वंश, गांधी वंश बन गया।

52. मिस्टर गांधी ने आरंभ में देश के विभाजन के विरोध में मत मंगवाए । उन पर अंधा विश्वास रखकर भोले- भाले हिंदुओं ने कांग्रेस को भरपूर समर्थन दिया; परंतु पश्चात मिस्टर गांधी ने स्वयं 'विभाजन होना चाहिए' यह मत अपनाया ।

(मिस्टर गांधी द्वारा हिंदुओं के साथ की गई यह भयंकर धोखेबाजी थी । इसीलिए अनेक हिंदू भ्रमित रहे एवं संहार पर बलि चढे ।)

53. 14-15 जून, 1947 को दिल्ली में आयोजित अखिल भारतीय कॉग्रेस समिति की बैठक में भारत विभाजन का प्रस्ताव अस्वीकृत होने वाला था, किन्तु गाँधी ने वहाँ पहुंच प्रस्ताव का समर्थन करवाया। यह भी तब जबकि उन्होंने स्वयं ही यह कहा था कि देश का विभाजन उनकी लाश पर होगा।

54. मोहम्मद अली जिन्ना ने गाँधी से विभाजन के समय हिन्दु मुस्लिम जनसँख्या की सम्पूर्ण अदला बदली का आग्रह किया था जिसे गान्धी ने अस्वीकार कर दिया। आज देश फिर विभाजन के कगार पर खड़ा है कारण फिर वही है जो आजादी के समय था ?

55. 6 मई 1946 को समाजवादी कार्यकर्ताओ को संभोधित करते हुये गांधी ने कहा था – "तब हम अहिंसा के डेरे, लीग की हिंसा के क्षेत्र में भी गाढ सकेंगे । हम बगैर उनका (मुसलमानो का) खून बहाये अपने रक्त के भेंट देकर लीग के साथ "समझोता" कर सकेंगे । ये सिर्फ गांधी द्वारा हिन्दुओ को , सिक्खो को कटवाने मरवाने की एक सोची समझी चाल थी।

56. अगस्त 1946 को जिन्ना के डायरेक्ट एक्शन के तहत कलकतते में 20 हजार हिन्दुओ की मुसलमानो द्वारा हत्या कर दी गयी । उस समय बंगाल में मुस्लिम लीग की सरकार थी । तब तत्काल गांधी ने मुसलमानो की रक्षा के लिए (हिन्दुओ की नहीं) पहले राजा जी को वह का राज्यपाल नियुक्त करवाया , फिर स्वयं पहुँचकर वहाँ सुहारवर्दी के साथ रहने लगे और आमरण अनशन शुरू कर दिया ताकि हिन्दू लोग मुसलमानो को न मारे बल्कि मुसलमानो की रक्षा करे ।

57. गौहत्या पर कानूनी प्रतिबन्ध को अनुचित बताते हुए इसी आशय के विचार गांधी ने प्रार्थना सभा में दिये -

" हिन्दुस्तान में गौ-हत्या रोकने का कोई कानून बन ही नहीं सकता । इसका मतलब तो जो हिन्दू नहीं हैं उनके साथ जबरदस्ती करना होगा । " - ' प्रार्थना सभा ' (25 जुलाई 1947)

अपनी 4 नवम्बर 1947 की प्रार्थना सभा में गांधी ने फिर कहा कि - *" भारत कोई हिन्दू धार्मिक राज्य नहीं हैं, इसलिए हिन्दुओं के धर्म को दूसरों पर जबरदस्ती नहीं थोपा जा सकता । मैं गौ सेवा में पूरा विश्वास रखता हूँ, परन्तु उसे कानून द्वारा बन्द नहीं किया जा सकता । "*

58. जुलाई 1947 को दिल्ली में अपने दैनिक भाषण में गांधी ने कहा था – **"यद्यपि में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का दो बार अध्यक्ष रह चुका हू , परंतु फिर भी मेरा ये दावा है कि हिंदुस्तान कि राष्ट्रभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी नहीं हो सकती ।"**

59.द इंडियन स्टेगल 1920 टू 1942 पुस्तक में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने मोहनदास गांधी को तानाशाह व क्रुर बताया है ।

60.1947 में जब भारत विभाजन के समय पाकिस्तान में हिन्दुओ और सिक्खो की जघन्य हत्याए हो रही थी , ट्रेनों में , बसो में हिन्दुओ और सिक्खो कि औरतों बच्चो , बूढ़ो, जवानो को बड़े बेरहमी से कत्ल करके लाशे हिंदुस्तान भेजी जा रही थी तब गांधी ने हिन्दुओ और सिक्खो को सलाह दी कि तुम मुस्लिम हत्यारो के प्रति प्रेम भावना प्रदर्शित करो .... 23 सितंबर 1947 की प्रार्थना सभा में गांधी ने कहा था – में अपने परामर्श को फिर दोहराता हू , हिन्दुओ और सिक्खो को भारत नहीं आना चाहिए , वही मर जाना चाहिए ।

61. जवाहरलाल की अध्यक्षता में मन्त्रीमण्डल ने सोमनाथ मन्दिर का सरकारी व्यय पर पुनर्निर्माण का प्रस्ताव पारित किया, किन्तु गाँधी जो कि मन्त्रीमण्डल के सदस्य भी नहीं थे ने सोमनाथ मन्दिर पर सरकारी व्यय के प्रस्ताव को निरस्त करवाया और इसी गांधी ने 13 जनवरी 1948 को आमरण अनशन के माध्यम से नेहरू और पटेल पर दवाब डाला कि दिल्ली की जामा मस्जिद का नवीनीकरण सरकारी खजाने से किया जाये और करवाकर ही माने।

62. गांधी अपनी मांग को मनवाने के लिए अनशन-धरना-रूठना किसी से बात न करने जैसी युक्तियों को अपनाकर अपना काम निकलवाने में माहिर थे | इसके लिए वो नीति-अनीति का लेशमात्र विचार भी नहीं करते थे |

63. गांधी कि दृष्टि में सैनिक होना पाप था। गांधी ने सैनिको को हल चलाने और शौचालय साफ करने कि सलाह दी थी। क्या ऐसा करना गांधी द्वारा सैनिको का अपमान नहीं था ? क्या गांधी का लक्ष्य भारत की सैन्य शक्ति को कमजोर करके उनका मनोबल तोड़ना नहीं था ?

64. भारत को स्वतंत्रता के बाद पाकिस्तान को एक समझौते के तहत 75 करोड़ रूपये देने थे भारत ने 20 करोड़ रूपये दे भी दिए थे लेकिन इसी बीच 22 अक्टूबर 1947 को पाकिस्तान ने कश्मीर पर आक्रमण कर दिया | केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल ने आक्रमण से क्षुब्ध होकर 55 करोड़ की राशि न देने का निर्णय लिया | जिसका महात्मा गांधी ने विरोध किया और आमरण अनशन शुरू कर दिया जिसके परिणामस्वरूप 55 करोड़ की राशि पाकिस्तान को भारत के हितों के विपरीत दे दी गयी।

65. पाकिस्तान से आए विस्थापित हिन्दुओं ने दिल्ली की खाली मस्जिदों में जब अस्थाई शरण ली तो गाँधी ने उन उजड़े हिन्दुओं को जिनमें वृद्ध, स्त्रियाँ व बालक अधिक थे मस्जिदों से से खदेड़ बाहर ठिठुरते शीत में रात बिताने पर मजबूर किया गया।

विभाजन की पीड़ा और गांधी वध की सत्यता...?

क्या थी विभाजन की पीड़ा ?

विभाजन के समय हुआ क्या क्या ?

विभाजन के लिए क्या था विभिन्न राजनैतिक पार्टियों का दृष्टिकोण ?

क्या थी पीड़ा पाकिस्तान से आये हिन्दू शरणार्थियों की ... मदन लाल पाहवा और विष्णु करकरे की?

क्या थी गोडसे की विवशता ?

क्या था गांधी वध का वास्तविक कारण ?

आइये इन सब सवालों के उत्तर खोजें ....

पाकिस्तान से दिल्ली की तरफ जो रेलगाड़िया आ रही थी, उनमे हिन्दू इस प्रकार बैठे थे जैसे माल की बोरिया एक के ऊपर एक रची जाती हैं.अन्दर ज्यादातर मरे हुए ही थे, गला कटे हुए रेलगाड़ी के छप्पर पर बहुत से लोग बैठे हुए थे, डिब्बों के अन्दर सिर्फ सांस लेने भर की जगह बाकी थी बैलगाड़िया ट्रक्स हिन्दुओं से भरे हुए थे, रेलगाड़ियों पर लिखा हुआ था,,

" आज़ादी का तोहफा "

रेलगाड़ी में जो लाशें भरी हुई **थी** उनकी हालत कुछ ऐसी थी की उनको उठाना मुश्किल था, दिल्ली पुलिस को फावड़ें में उन लाशों को भरकर उठाना पड़ा ट्रक में भरकर किसी निर्जन स्थान पर ले जाकर, उन पर पेट्रोल के फवारे मारकर उन लाशों को जलाना पड़ा इतनी विकट हालत थी उन मृतदेहों की... भयानक बदबू......।

सियालकोट से खबरे आ रही थी की वहां से हिन्दुओं को निकाला जा रहा हैं, उनके घर, उनकी खेती, पैसा-अडका, सोना-चाँदी, बर्तन सब मुसलमानों ने अपने कब्जे में ले लिए थे मुस्लिम लीग ने, सिवाय कपड़ों के कुछ भी ले जाने पर रोक लगा दी थी.

किसी भी गाडी पर हल्ला करके हाथ को लगे उतनी महिलाओं- बच्चियों को भगाया गया.बलात्कार किये बिना एक भी हिन्दू स्त्री वहां से वापस नहीं आ सकती थी ... बलात्कार किये बिना.....?

जो स्त्रियाँ वहां से जिन्दा वापस आई वो अपनी वैद्यकीय जांच करवाने से डर रही थी....
डॉक्टर ने पूछा क्यों ???
उन महिलाओं ने जवाब दिया... हम आपको क्या बताये हमें क्या हुआ हैं ?
हमपर कितने लोगों ने बलात्कार किये हैं हमें भी पता नहीं हैं...उनके सारे शरीर पर चाकुओं के घाव थे.
"आज़ादी का तोहफा"
जिन स्थानों से लोगों ने जाने से मना कर दिया, उन स्थानों पर हिन्दू स्त्रियों की नग्न यात्राएं (धिंड) निकाली गयीं, बाज़ार सजाकर उनकी बोलियाँ लगायी गयीं और उनको दासियों की तरह खरीदा बेचा गया।

1947 के बाद दिल्ली में 400000 हिन्दू निर्वासित आये, और इन हिन्दुओं को जिस हाल में यहाँ आना पड़ा था, उसके बावजूद पाकिस्तान को पचपन करोड़ रुपये देने ही चाहिए ऐसा मोहनदास करमचंद गाँधी का आग्रह था..।

विधि मंडल ने विरोध किया, पैसा नहीं देगे....और फिर बिरला भवन के पटांगन में महात्मा जी अनशन पर बैठ गए.....पैसे दो, नहीं तो मैं मर जाउगा....एक तरफ अपने मुहँ से ये कहने वाले तथाकथित महात्मा जी, हिंसा उनको पसंद नहीं हैं दूसरी तरफ जो हिंसा कर रहे थे उनके लिए अनशन पर बैठ गए... क्या यह हिंसा नहीं थी .. अहिंसक आतंकवाद की आड़ में?

दिल्ली में हिन्दू निर्वासितों के रहने की कोई व्यवस्था नहीं थी, इससे ज्यादा बुरी बात ये थी की दिल्ली में खाली पड़ी मस्जिदों में हिन्दुओं ने शरण ली तब बिरला भवन से गांधी ने भाषण में कहा की दिल्ली पुलिस को मेरा आदेश हैं मस्जिद जैसी चीजों पर हिन्दुओं का कोई अधिकार नहीं रहना चाहिए । निर्वासितों को बाहर निकालकर मस्जिदे खाली करे..क्योंकि गांधी की दृष्टी में जान सिर्फ मुसलमानों में थी हिन्दुओं में नहीं..।

अब सवाल तो सबसे बड़ा ये है की दिल्ली पुलिस को आदेश देने वाला ये गांधी सरकार में था क्या ? असल में नेहरु इसका सिर्फ मोहरा था सरकार पर कब्ज़ा इस गांधी का ही था।

जनवरी की कडकडाती ठंडी में हिन्दू महिलाओं और छोटे छोटे बच्चों को हाथ पकड़कर पुलिस ने मस्जिद के बाहर निकाला, गटर के किनारे रहो लेकिन छत के निचे नहीं क्योकि... तुम हिन्दू हो....।

4000000 हिन्दू भारत में आये थे, ये सोचकर की ये भारत हमारा हैं.

12 जनवरी को गांधी ने कहा, ***"जिस दिल्ली में ज़ाकिर हुसैन इत्मीनान से न चल-फिर सकें, वह उनकी नहीं हो सकती थी.***

दिल्ली पाकिस्तान से आए शरणार्थियों से भरी हुई थी. उनके साथ पाकिस्तान में हिंदुओं पर हुए ज़ुल्म की भयानक कहानियां भी आ रहीं थीं. यहाँ मुसलमानों पर हमले हो रहे थे, वे अपने इलाक़ों को छोड़ने पर मजबूर थे. मस्जिदों को तोड़ा और मंदिरों में बदला जा रहा था.

महरौली के ख़्वाजा कुतुबुद्दीन के मज़ार पर हिन्दुओं का क़ब्ज़ा हो गया था. **गांधी की मांग थी कि शरणार्थी हिंदू और सिख, मुस्लिम घरों और पूजा स्थलों से निकलें.** ये पाकिस्तान से अपना सब कुछ खो कर आए थे और यहाँ उनसे जनवरी की कड़ाके की ठंड को झेलने को कहा जा रहा था. वे गाँधी के उपवास से बेहद नाराज़ थे. दिल्ली में ***'गांधी मरता है तो मरने दो'*** के नारे लग रहे थे.

गाँधी अविचलित था,

वो पाकिस्तान जाना चाहता था, और बँटवारे की वजह से संसाधनों के बँटवारे में भी भारत से इंसाफ़ और उदारता की माँग की और पाकिस्तान को उसका हिस्सा देने को कहा.

गाँधी के बेटे ने कहा कि वे उपवास करके ग़लत कर रहे थे. उनके जीवित रहने पर लाखों जानें बच सकती थीं. गाँधी ने बेटे की अपील भी ठुकरा दी.

गाँधी का यह उपवास सत्रह तारीख़ तक चला. 17 जनवरी को राजेन्द्र प्रसाद के घर पर करोल बाग़, पहाडगंज, सब्ज़ी मंडी और दूसरे इलाक़ों के अगुओं की बैठक हुई. शरणार्थी शिविरों के हिन्दुओं और सिखों ने इस वादे पर दस्तख़त किए कि वे मुस्लिम अधिकार वाली जगहों को और मस्जिदों को ख़ाली कर देंगे.

तोड़ा उपवास

18 जनवरी की सुबह सब फिर राजेन्द्र प्रसाद के घर इकठ्ठा हुए और दुबारा संकल्प पर ग़ौर किया. फिर

सब गांधी के पास पहुँचे. राजेंद्र बाबू ने उनकी ओर से गाँधी को विश्वास दिलाया कि सबने सच्चे हृदय से हिंसा और दुराव ख़त्म करने का निर्णय किया है. महरौली के ख़्वाजा का सालाना उर्स भी पहले जैसे ही मिल कर मनाया जाएगा. यह घोषणा पत्र हिंसा के बीच सबने क़बूल किया. इसके बाद 18 तारीख़ को गाँधी ने अपना उपवास तोड़ा.

गाँधी मुसलमानों से किसी भी वफ़ादारी के ऐलान की मांग के ख़िलाफ़ थे. मुसलमानों पर शक करना उनकी दृष्टि में अपराध था।

हिन्दू भोले होते ये सब जानते है दुश्मन और दोस्त में फर्क नहीं पहचानते इसलिए ये सब निर्वासित गांधी से मिलने बिरला भवन जाते थे तब गांधी माइक पर से कहते थे,,,क्यों आये यहाँ अपने घरदार बेचकर,,वहीं पर अहिंसात्मक प्रतिकार करके क्यों नहीं रहे ?? यही अपराध हुआ तुमसे अभी भी वही वापस जाओ.. और ये गांधी किस आशा पर पाकिस्तान को पचपन करोड़ रुपये देने निकले थे ?

सरदार पटेल ने कहा की ठीक हैं अगर भाई को इस्टेट में से हिस्सा देना पड़ता हैं तो कर्ज की रकम का हिस्सा भी चुकाना पड़ता हैं.

गाँधीजी ने कहा बराबर हैं... ***पटेल जी ने कहा,,"फिर दुसरे महायुद्ध के समय अपने देश ने 110 करोड़ रुपये कर्ज के रूप में खड़े किये थे,अब उसका एक तृतीय भाग पाकिस्तान को देने का कहिये,, आप तो बैरिस्टर हैं आपको कायदा पता हैं. " गांधीजी ने कहा,, नहीं ये नहीं होगा***

कितना महान ... बिना तलवार उठाये ... 15 लाख हिन्दुओं का नरसंहार करवाया। 20 लाख से ज्यादा हिन्दुओं का इस्लाम में धर्मांतरण हुआऔर उसके बाद यह संख्या 2 करोड़ भी पहुंची। 10 लाख से ज्यादा हिन्दू नारियों को खरीदा बेचा गया। 20 लाख से ज्यादा हिन्दू नारियों को जबरन मुस्लिम बना कर अपने घरों में रखा गया, तरह तरह की शारीरिक और मानसिक यातनाओं के बाद।

ऐसे बहुत से प्रश्न, वास्तविकताएं और सत्य तथा तथ्य हैं जो की 1947 के समकालीन लोगों ने अपनी आने वाली पीढ़ियों से छुपाये, हिन्दू कहते हैं की जो हो गया उसे भूल जाओ, नए कल की शुरुआत करो ..

परन्तु इस्लाम के लिए तो कोई कल नहीं .. कोई आज नहीं ...वहां तो दार-उल-हर्ब को दार-उल-इस्लाम में बदलने का ही लक्ष्य है पल.. प्रति पल।

विभाजन के बाद का संकटकाल

आपने बहुत से देशों में से नए देशों का निर्माण देखा होगा, संयुक्त सोवियत संघ रूस टूटने के बाद बहुत से नए देश बने, जैसे ताजिकिस्तान, कजाकिस्तान आदि ... परन्तु यह सब देश जो बने वो एक परिभाषित अविभाजित सीमा के अंदर बने।

और जब भारत का विभाजन हुआ .. तो क्या कारण थे की पूर्वी पाकिस्तान और पश्चिमी पाकिस्तान बनाए गए... क्यों नही एक ही पाकिस्तान बनाया गया...

या तो पश्चिम में बना लेते या फिर पूर्व में। परन्तु ऐसा नही हुआ .... यहाँ पर उल्लेखनीय है की मोहनदास करमचन्द ने तो यहाँ तक कहा था की पूरा पंजाब पाकिस्तान में जाना चाहिए, बहुत कम लोगों को ज्ञात है की 1947 के समय में पंजाब की सीमा दिल्ली के नजफगढ़ क्षेत्र तक होती थी .. यानी की पाकिस्तान का बोर्डर दिल्ली के साथ होना तय था ... मोहनदास करमचन्द के अनुसार। नवम्बर 1968 में पंजाब में से दो नये राज्यों का उदय हुआ .. हिमाचल प्रदेश और हरियाणा।

पाकिस्तान जैसा मुस्लिम राष्ट्र पाने के बाद भी जिन्ना और मुस्लिम लीग चैन से नहीं बैठे ..
उन्होंने फिर से मांग की ...
की हमको पश्चिमी पाकिस्तान से पूर्वी पाकिस्तान जाने में बहुत समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। पानी के रास्ते बहुत लम्बा सफर हो जाता है क्योंकि श्री लंका के रस्ते से घूम कर जाना पड़ता हैऔर हवाई जहाज से यात्राएं करने में अभी पाकिस्तान के मुसलमान सक्षम नही हैं इसलिए हमको भारत के बीचो बीच एक Corridor (गलियारा) बना कर दिया जायें, साथ में कुछ अन्य मांगे भी थी। जो इतिहास की पुस्तको से गायब की जा चुकी हैं।

विभाजन के बाद का संकटकाल यही था कि 3 फरवरी, 1948 को मोहनदास गांधी लाहौर जा रहे थे, मोहम्मद अली जिन्ना (स्वार्थवश हिन्दू से मुस्लिम बने परिवार की पहली पीढ़ी का एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति जो काठियावाड़ क्षेत्र का रहने वाला था, जिसके बाप का नाम पुन्ना लाल ठक्कर था) के निमंत्रण पर। जन साधारण को भय था कि यदि गांधी 3 फरवरी को पाकिस्तान पहुँच गये तो जिन्ना की इन मांगों को भी मान लिया जायेगा।

भारत के बड़े हिस्से के हिंदू उनसे अधिक निराश हो चुके थे. उनके मुताबिक़ गांधी उनके लिए न सिर्फ़ ग़ैरज़रूरी हो गए थे, बल्कि उनको लगने लगा था कि गांधी का जीवित रहना भारत के लिए ख़तरनाक हो सकता था.

इसलिए जब नाथूराम गोडसे ने 30 जनवरी को उन्हें गोली मारकर उनका वध कर दिया तो धर्मनिष्ठ हिन्दुओं ने मिठाइयाँ बांटी और दीपावली मनायी।

गोडसे फिल्म का एक प्रसंग है, . . . अम्बेडकर बालकनी में बैठा झूला झूल रहा था, नौकर भागता हुआ आता है साब साब...!! तुमच्या मालुम गाँधी गेले मतलब आपको पता है गाँधी गया, सुनते है अम्बेडकर साब झूले से उतर जाता है और फिर चेहरे पर एक ख़ुशी असल में अम्बेडकर भी गाँधी वध से उतना ही प्रसन्न था जितना सरदार पटेल, अम्बेडकर ने तो तब हिन्दू महासभा के वकील भोपटकर जी को 10,000 रूपये की सहायता दी थी पर नेहरु के षड्यंत्र के कारण बिना संविधान के इस देश में एक मात्र नाथूराम गोडसे को ही फांसी हुई थी।

जस्टिस खोसला जिन्होंने गांधी वध से सम्बन्धित केस की पूरी सुनवाई की... 35 तारीखें पडीं। अदालत ने निरीक्षण करवाया और पाया नाथूराम गोडसे जी की मानसिक दशा को तत्कालीन चिकित्सकों ने एक दम सामान्य घोषित किया""

गाँधी वध सुनवाई के समय न्यायमूर्ति खोसला से नाथूराम ने अपना वक्तव्य स्वयं पढ़ कर सुनाने की अनुमति मांगी थी और उसे यह अनुमति मिली थी नाथूराम गोडसे का यह न्यायालयीन वक्तव्य भारत सरकार द्वारा प्रतिबंधित कर दिया गया था इस प्रतिबन्ध के विरुद्ध नाथूराम गोडसे के भाई तथा गाँधी वध के सह अभियुक्त गोपाल गोडसे ने ६० वर्षों तक वैधानिक लडाई लड़ी और उसके फलस्वरूप सर्वोच्च न्यायलय ने इस प्रतिबन्ध को हटा लिया तथा उस वक्तव्य के प्रकाशन की अनुमति दे दी।

न्ययालय में चले अभियोग के परिणामस्वरूप गोडसे को मृत्युदण्ड मिला किन्तु गोडसे ने न्यायालय में अपने कृत्य का जो स्पष्टीकरण दिया गाँधी वध के जो १५० कारण बताये थे उससे प्रभावित होकर उस अभियोग के न्यायधीश श्री जे. डी. खोसला ने अपनी एक पुस्तक में लिखा-

"नथूराम का अभिभाषण दर्शकों के लिए एक आकर्षक दृश्य था। खचाखच भरा न्यायालय इतना भावाकुल हुआ कि लोगों की आहें और सिसकियाँ सुनने में आती थीं और उनके गीले नेत्र और गिरने वाले आँसू दृष्टिगोचर होते थे। न्यायालय में उपस्थित उन प्रेक्षकों को यदि न्यायदान का कार्य सौंपा जाता तो मुझे तनिक भी संदेह नहीं कि उन्होंने अधिकाधिक सँख्या में यह घोषित किया होता कि नथूराम निर्दोष है।"
तो भी नथूराम ने भारतीय न्यायव्यवस्था के अनुसार एक व्यक्ति की हत्या के अपराध का दण्ड मृत्युदण्ड के रूप में सहज ही स्वीकार किया। परन्तु भारतमाता के विरुद्ध जो अपराध गाँधी ने किए, उनका दण्ड भारतमाता व उसकी सन्तानों को भुगतना पड़ रहा है। यह स्थिति कब बदलेगी?

नाथूराम गोडसे को सह अभियुक्त नाना आप्टे के साथ १५ नवम्बर १९४९ को पंजाब के अम्बाला की जेल में मृत्यु दंड दे दिया गया। उन्होंने अपने अंतिम शब्दों में कहा था... *यदि अपने देश के प्रति भक्तिभाव रखना कोई पाप है तो मैंने वो पाप किया है और यदि यह पुन्य है तो उसके द्वारा अर्जित पुन्य पद पर मैं अपना नम्र अधिकार व्यक्त करता हूँ।*
- पंडित नाथूराम गोडसे

मुसलमान गांधीजी को बहुत बहुत बहुत पसंद करते हैं...पता है क्यों..?

क्योंकि गांधीजी ने कहा था....

1. "अगर मुसलमान लोग हम हिन्दुओं को मारना चाहें...तो हमें मौत को वीरता से गले लगाना चाहिए..." अर्थात हिन्दुओं को अपनी रक्षा के लिए शस्त्र नहीं उठाना चाहिए, चुप चाप मर जाना चाहिए...

2. मुसलमान लाख हिन्दुओं को बर्बाद करना चाहे...फिर भी हिन्दुओं को उनके लिए अपने दिलों में गुस्सा नहीं पालना चाहिए....

3. अगर मुसलमान लोग हम हिन्दुओं को मारने के बाद अपना शाशन कायम करें तो हम अपना अपना जीवन बलिदान देने के बाद एक नयी दुनिया में जायेंगे....

मुसलमानों... 20 वी सदी के इस गांधी से अच्छा दोस्त तुमको कहाँ मिलेगा...अल्लाह भी चाहें तो दूसरा नहीं बना सकता...

गांधी जब ब्रिटेन से लौटा और वकालत शुरू की तो उसके अधिकतर क्लाइन्ट मुस्लिम ही थे गांधी की सोच में इस्लाम पूरी तरह हावी था बिरला हॉउस में रहते हुए जब वो प्रार्थना करता तो उसकी प्रारम्भ कुरान की आयत से होती थी |

हमें पढ़ाया जाता है कि गांधीजी देश विभाजन के खिलाफ थे । लेकिन इस बात पर भरोसा कैसे किया जा सकता है । सुभाष बाबू को कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा देने पर मजबूर करने वाले तो गांधीजी ही थे । वहीँ आजादी से ठीक पहले सरदार पटेल को कांग्रेस अध्यक्ष के लिए बहुमत मिलने के बावजूद गांधीजी की इच्छा से नेहरु अध्यक्ष बने । ये दोनों घटनाएं अलग अलग समय की है और ये दर्शाती है कि गांधीजी की

इच्छा के विपरीत कांग्रेस कुछ भी नहीं कर सकने की स्थति में थी । ऐसे में यह मान लेना बड़ी भूल है कि देश विभाजन में गांधीजी की इच्छा के विपरीत जाकर कांग्रेस नें देश का बँटवारा स्वीकार किया था ।

गांधी ने नहीं चलाया था असहयोग आंदोलन

एक किसान गाडी में गन्ने लेकर जा रहा था, आगे से एक अंग्रेज साहब आ गए। अंग्रेज ने किसान से कुछ कहा और किसान ने अपने गन्ने नीचे गिरा दिए, गाडी लेकर अंग्रेज अफसर के साथ उसका सामान ढोने चला गया। एक संन्यासी इस घटना को देख रहा था। वह गन्नों के निकट जब तक बैठा रहा, तब तक कि किसान वापस नहीं आया। संन्यासी ने किसान से पूछा,

'आपको अंग्रेज सरकार ने कितने पैसे दिए!'

'एक धेला भी नहीं!' किसान बोला।

'और तुमने अपना काम छोडकर, अपने गन्ने बीच रास्ते में गिराकर अंग्रेज साहब का सामान फोकट में ढोया!'

'क्या करें महाराज बेगारी तो करनी पड़ेगी सरकारी नियम जो है।'

जी हां यह थी बेगारी प्रथा...वह संन्यासी उस किसान के साथ गांव में चला गया और किसानों को उपदेश में बेगारी प्रथा का विरोध करने का मंत्र दिया। उस किसान का नाम गोविंद था, जिसे संन्सासी ने अपना शिष्य बनाया और उसके नाम के आगे गुरु शब्द और जोड़ दिया और आदेश दिया कि सभी किसानों के अब आप गुरु हो। वह संन्यासी और कोई नहीं आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती थे।

गोविंद गुरु का जन्म विक्रमी संवत 1915 मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा यानी 20 दिसंबर 1858 को तत्कालीन डूंगरपुर राज्य के बांसिया गांव में हुआ था।

उन्होंने सन 1883 में संप सभा बनाकर 1913 तक असहयोग आंदोलन चलाया। इस असहयोग आंदोलन को कुचलने के लिए खेरवाडा छावनी के सिपाहियों एवं गुजरात की फौजों ने मानागारु की पहाड़ी पर 17 नवंबर 1913 को 1500 आंदोलनकारियों की लाशें बिछा दी थी। जलियावाला बाग सभी को याद है, लेकिन

यह असहयोग आंदोलनकारियों का बलिदान किसी को याद नहीं, यदि याद रहता तो मार्च 1920 का गांधी का असहयोग आंदोलन फीका पड़ जाता और फिर असहयोग आंदोलन के प्रणेता गांधी न माने जाते।

गोविंद गुरु के असहयोग आंदोलन के कुछ नियम:

शराब न पीओ, मांसाहार त्यागो और सरकार द्वारा शराब बिक्री का विरोध करो

सभी फैसले पंचायत करे, अदालत में मत जाओ

स्वदेशी वस्त्र पहनो..विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार करो

अंग्रेज और जागीरदार को कर देना बंद करो और

दासता, बेगार व कुली प्रथा बंद करो...

और हमारे बच्चों को पढाया जाता है कि असहयोग आंदोलन के जन्मदाता गांधी थे....?

गुजरात में गांधी के गृहनगर में पिछले 300 साल से एक मंदिर में लकड़ी के ऐसे तीन बंदर विशिष्ट पूजा करने वालों को प्रदान किए जाते हैं, जिसमें एक बंदर के हाथ कानों पर, एक के मुख पर और एक के आंखों पर होते हैं। यहां मनुस्मृति के इस मंत्र की शिक्षा दी जाती है कि सज्जन पुरुष यानी साधु मुख से बुरा न बोलें, नासिका से दुर्गंध न सूंघे, आंखों से बुरा न देखे और कानों से बुरा न सुनें।

क्रुद्‌धयन्तं न प्रतिकुरध्येदाकुरष्टः कुशलं वदेत्
सप्तद्‌वारवकीर्णां च न वाचननृतां वदेत्

अब तीन बंदरों पर भी नकलची गांधीवाद वालों का कब्जा हो गया....वाह रे इतिहासकारों....

संदर्भ :-1. गोविन्द गुरु और दयानंद, लेखक मुनेश जोशी संस्करण 1934

2. 1857 की क्रांति में मेरठ का योगदान, लेखक आचार्य दीपांकर

3. हमारी विरासत, लेखक तेजपाल सिंह धामा

4. स्वामी दयानंद स्मारिका, 1975 अजमेर....

जब गांधी ने महात्मा विजय पथिक के नेतृत्व में संचालित बिजौलियां किसान आंदोलन को तोड़ने का कार्य किया ?

जिस तरह मिस्टर मोहनदास गांधी ने महात्मा भगत सिंह जी की स्वराज मूवमेंट को कमजोर करने के लिए दांडी मार्च निकाला था उसी तरह से असहयोग आंदोलन भी महात्मा विजय सिंह पथिक के नेतृत्व में चल रहे बिजौलियां किसान आंदोलन को तोड़ने के लिए चलाया गया था।

महात्मा पथिक और गोपाल सिंह खरवा ने सशस्त्र विद्रोह के लिए दो हजार युवकों का दल तैयार किया और तीस हजार से अधिक बन्दूकें जुटा ली थी। लेकिन उनकी योजना लीक हो गयी, और महात्मा पथिक 500 क्रांतिकारियों के साथ गिरफ्तार कर लिए गए। लेकिन 1915 में महात्मा पथिक जेल से भाग निकले और बिजौलियां पहुँच कर किसान आंदोलन की कमान संभाल ली।

तब ब्रिटिश राज द्वारा किसानों से 84 प्रकार के कर वसूले जाते थे और किसानों की मुख्य माँगें भूमि कर, युद्व कोष कर, अधिभारों एवं बेगार से सम्बन्धित थी। प्रत्येक गाँव में शाखाएं खोली गयी और पंचायतो ने भूमि कर देना बंद कर दिया। किसान वास्तव में हाल ही में हुयी 1917 की रूसी क्रान्ति की सफलता से उत्साहित थे, और महात्मा पथिक ने उनके बीच रूस में श्रमिकों और किसानों का शासन स्थापित होने के समाचार को खूब प्रचारित किया था। जल्दी ही महात्मा विजय सिंह पथिक ने कानपुर से प्रकाशित गणेशशंकर विद्यार्थी द्वारा सम्पादित पत्र 'प्रताप' के माध्यम से बिजौलिया के किसान आन्दोलन को समूचे देश में चर्चा का विषय बना दिया।

1919 में अमृतसर कांग्रेस में महात्मा पथिक ने प्रयत्न से बाल गंगाधर तिलक ने बिजौलिया सम्बन्धी प्रस्ताव रखा। तब मोहनदास गांधी ने वचन दिया कि यदि मेवाड़ सरकार ने न्याय नहीं किया तो वह स्वयं बिजौलिया सत्याग्रह का संचालन करेगें। किन्तु मोहनदास गांधी किसी तरह आंदोलन को कमजोर करने के लिए टाइम पास करना चाहते थे।

1920 में पथिक जी अपने साथियों के साथ नागपुर अधिवेशन में शामिल हुए और बिजौलिया के किसानों की दुर्दशा के बारे में मोहनदास गांधी को बताया।

महात्मा पथिक अहमदाबाद अधिवेशन में फिर से इस विषय को लेकर प्रस्तुत हुए लेकिन मोहनदास गांधी ने तब सामंतो और अंग्रेजो का पक्ष लिया, जिससे महात्मा विजय सिंह पथिक नाराज हो गये और उन्होंने मोहनदास गांधी को खूब खरी खोटी सुनायी।

मोहनदास गांधी ने अहमदाबाद अधिवेशन में महात्मा पथिक से कहा कि, "किसानों को अपनी जमीन हिजरत (छोड़ देना) कर देनी चाहिए"। पथिक जी ने इसे अपनाने से यह कहकर इनकार कर दिया कि "यह हिजड़ो का काम है मर्दो का नहीं"।

महात्मा पथिक ने तब आंदोलन को और भी तेज कर दिया और पूरे देश से किसान इस आंदोलन में जुड़ने लगे।

इसी समय अंग्रेजो के इशारे पर मोहनदास गांधी ने महात्मा पथिक की मूवमेंट तोड़ने के लिए 1920 में असहयोग आंदोलन शुरू कर दिया, ताकि अंग्रेजो और सामंतो के खिलाफ उठते सशस्त्र आंदोलन को कमजोर किया जा सके। अंग्रेज जानते थे कि आंदोलन का नेतृत्व पथिक जैसे क्रांतिकारी कर रहे है और इसकी उन्हें भारी कीमत चुकानी पड़ सकती है। किन्तु 1921 के आते-आते आंदोलन बेगू, पारसोली, भिन्डर, बासी और उदयपुर तक फ़ैल चुका था और पूरे देश में पैर पसार रहा था।

अंतत अंग्रेजो को झुकना पड़ा और किसानों की अनेक माँगें मान ली गईं। चौरासी में से पैंतीस लागतें माफ कर दी गईं। जुल्मी कारिन्दे बर्खास्त कर दिए गए। किसानों की अभूतपूर्व विजय हुयी। मेवाड सरकार ने पथिक जी को गिरफ्तार कर लिया और उन्हें पाँच वर्ष की सजा सुना दी गई।

मोहनदास गांधी, अंग्रेजो और सामंतो के प्रत्यक्ष प्रतिरोध के बावजूद यह आंदोलन सफल रहा और ब्रिटिश सरकार को किसानो के आगे झुकना पड़ा था। किन्तु अंग्रेज और मोहनदास गांधी इस आंदोलन को पूरे देश में फैलने से रोकने में सफल हो गए थे।

दरअसल असहयोग आंदोलन को जनता का समर्थन मिलने के पीछे भी बिजौलिया आंदोलन की भूमिका थी। बिजौलिया आंदोलन पिछले 6 वर्षों से उत्तरोत्तर मजबूत हो रहा था क्योंकि यह किसानों की वास्तविक समस्या से जुड़ा हुआ था। यदि यह आंदोलन फ़ैल जाता तो अंग्रेजो को लगान का भारी नुकसान होता, और अंग्रेज इतना बड़ा मौद्रिक घाटा सहने को तैयार नहीं थे। साथ ही 1919 में हुए जलियांवाला काण्ड के कारण में जनता में भारी असंतोष था।

आंदोलन के लिए जनता में पर्याप्त असंतोष पनप चुका था, और मोहनदास गांधी अवसर गँवाना नहीं चाहते थे। साथ ही अंग्रेजो को यह भी अंदेशा था कि यदि बिजौलिया किसान आंदोलन आगे बढ़ता रहा तो सशस्त्र विद्रोह हो सकता है। क्योंकि इस आंदोलन का नेतृत्व क्रांतिकारी कर कर रहे थे।

ऐसे में महा मोहनदास गांधी ने इस जनता में व्याप्त इस असंतोष को असहयोग आंदोलन में डायवर्ट कर दिया और ज्योंही उन्हें लगा कि बढ़ता हुआ असहयोग आंदोलन हाथ से बाहर हो सकता है, तभी 1922 में उन्होंने चौरी चौरा के नाम पर असहयोग आंदोलन वापिस ले लिया।

इसके बाद मोहनदास गांधी अगले 7 वर्ष तक शीत निद्रा में रहे और ज्योंही महात्मा भगत सिंह के स्वराज्य आंदोलन ने गति पकड़ी उसी समय वे इसे तोड़ने के लिए दांडी मार्च लेकर आ गए।

यदि अंग्रेजो ने मोहनदास गांधी को असहयोग आंदोलन करने का गुप्त आदेश नही दिया होता तो पूरी संभावना थी कि क्रांतिकारियों के नेतृत्व में बिजौलिया किसान आंदोलन राष्ट्रव्यापी हो जाता और अंग्रेजो को देश छोड़कर भागना पड़ता।

गांधी की साम्प्रदायिक सहिष्णुता

गांधी ने पुलिस सुरक्षा में मंदिर में जबरन कुरान पढ़ी

एक बार एक वाल्मीकि बस्ती में मंदिर में गाँधी मुसलमानों की कुरान का पाठ करा रहे थे. तभी भीड़ में से एक औरत ने उठकर गाँधी से ऐसा करने को मना किया.
गाँधी ने पूछा .. क्यों?

तब उस औरत ने कहा कि ये हमारे धर्म के विरुद्ध है.

गाँधी ने कहा.... मै तो ऐसा नहीं मानता ,

तो उस औरत ने जवाब दिया कि हम आपको धर्म में व्यवस्था देने योग्य नहीं मानते.

गाँधी ने कहा कि इसमें यहाँ उपस्थित लोगों का मत ले लिया जाय.

औरत ने जवाब दिया कि क्या धर्म के विषय में वोटो से निर्णय लिया जा सकता है.

गाँधी बोला कि आप मेरे धर्म में बांधा डाल रही हैं.

औरत ने जवाब दिया कि आप तो करोडो हिन्दुओ के धर्म में नाजायज दखल दे रहे हैं.

गाँधी बोला ..मै तो कुरान सुनुगा .

औरत बोली ...मै इसका विरोध करुँगी.

और तभी औरत के पक्ष में सैकड़ो वाल्मीकि नवयुवक खड़े हो गए.और कहने लगे कि मंदिर में कुरान पढवाने से पहले किसी मस्जिद में गीता और रामायण का पाठ करके दिखाओ तो जाने.

विरोध बढ़ते देखकर गाँधी ने पुलिस को बुला लिया. पुलिस आई और विरोध करने वालों को पकड़ कर ले गयी,और उनके विरुद्ध दफा 107 का मुकदमा दर्ज करा दिया गया . और इसके पश्चात गाँधी ने पुलिस सुरक्षा में उस मंदिरमें कुरान पढ़ी. ये थी उस गाँधी की असली सत्यता, वो मस्जिद में तो कभी गीता का पाठ करा न सका, पर मंदिर में आकर कुरान का पाठ जरूर करा गया...|

(पुस्तक विश्वासघात .... लेखक - गुरुदत्त)

गांधी द्वारा बेहद चालाकी से "श्री राम धुन- रघुपति राघव राजा राम" में किया गया परिवर्तन

'रघुपति राघव राजा राम' इस प्रसिद्ध भजन का नाम है.."राम धुन" .

जो कि बेहद लोकप्रिय भजन था.. कालनेमिवादी मोहनदास गाँधी ने बड़ी चालाकी से इसमें परिवर्तन करते हुए अल्लाह शब्द जोड़ दिया..

आप भी नीचे देख लीजिए.. असली राम धुन भजन

रघुपति राघव राजाराम

पतित पावन सीताराम

सुंदर विग्रह मेघश्याम

गंगा तुलसी शालग्राम

भद्रगिरीश्वर सीताराम

भगत-जनप्रिय सीताराम

जानकीरमणा सीताराम

जयजय राघव सीताराम

मोहनदास गाँधी द्वारा बेहद चालाकी से किया गया परिवर्तन..गाँधी का राम धुन भजन

रघुपति राघव राजाराम,

पतित पावन सीताराम

सीताराम सीताराम,

भज प्यारे तू सीताराम

ईश्वर अल्लाह तेरो नाम,

सब को सन्मति दे भगवान

**अब सवाल ये उठता है, कि मोहनदास करमचन्द गाँधी को ये अधिकार किसने दिया की,.. हमारे आराध्य भगवान श्री राम को सुमिरन करने के भजन में ही पिशाच समुदाय के आराध्य अल्लाह को घुसा दे...

अल्लाह का हमसे क्या संबंध?

क्या अब सनातन हिंदू अपने ईष्ट देव का ध्यान भी अपनी मर्ज़ी से नही ले सकता..? और जिस भी व्यक्ति को हमारी बात से कष्ट हुआ हो.. वो इसी भजन को अल्लाह शब्द वाला संस्करण ज़रा किसी मस्जिद मे चलवा कर दिखा दे.. फिर हमसे कोई गीला शिकवा करे ।

गौहत्या पर प्रतिबंध के खिलाफ गाँधी

भारत को अस्थिर करने की योजना के एक भाग के रूप में अरब सामाज्यवादी जिहादी मुसलमान दरिंदों द्वारा 712ईश्वी में गौ हत्या शुरू की गई। इसके बाद ईसाईयों ने भारत में 1760ईश्वी में आधुनिक क़साईख़ानों की शुरूआत की, एक क्षमता के साथ प्रति दिन 30,000 (हज़ार तीस),कम से कम एक करोड़ गायों को एक साल में मारा गया !

1918 में ग्राम कटारपुर (हरिद्वार) के मुसलमानों ने बकरीद पर सार्वजनिक रूप से गोहत्या की घोषणा की। मायापुरी क्षेत्र में कभी ऐसा नहीं हुआ था। अतः हिन्दुओं ने ज्वालापुर थाने पर शिकायत की; पर वहां के थानेदार मसीउल्लाह तथा अंग्रेज प्रशासन की शह पर ही यह हो रहा था। हरिद्वार में शिवदयाल सिंह थानेदार थे। उन्होंने हिन्दुओं को हर प्रकार से सहयोग देने का वचन दिया। अतः हिन्दुओं ने घोषणा कर दी कि चाहे जो हो; पर गोहत्या नहीं होने देंगे।

17 सितम्बर, 1918 को बकरीद थी। हिन्दुओं के विरोध के कारण उस दिन तो कुछ नहीं हुआ; पर अगले दिन मुसलमानों ने पांच गायों का जुलूस निकालकर उन्हें पेड़ से बांध दिया। वे पिशाच 'नारा ए तकबीर, अल्लाहो अकबर' जैसे भड़कीले नारे लगा रहे थे। दूसरी ओर हनुमान मंदिर के महंत रामपुरी जी महाराज के नेतृत्व में सैकड़ों हिन्दू युवक भी अस्त्र-शस्त्रों के साथ सन्नद्ध थे। उन्होंने 'जयकारा वीर बजरंगी, हर हर महादेव' कहकर धावा बोला और सब गाय छुड़ा लीं। लगभग 30 मुसलमान मारे गये। बाकी सिर पर पैर रखकर भाग खड़े हुए। इस मुठभेड़ में अनेक हिन्दू भी हताहत हुए। महंत रामपुरी जी के शरीर पर चाकुओं के 48 घाव लगे। अतः वे भी बच नहीं सके।

पुलिस और प्रशासन को जैसे ही मुसलमानों के वध का पता लगा, तो वह सक्रिय हो उठा। हिन्दुओं के घरों में घुसकर लोगों को पीटा गया। महिलाओं का अपमान किया गया। 172 लोगों को थाने में बन्द कर दिया गया। जेल का डर दिखाकर कई लोगों से भारी रिश्वत ली गयी। गुरुकुल महाविद्यालय के कुछ छात्र भी इसमें फंसा दिये गये। फिर भी हिन्दुओं का मनोबल नहीं टूटा।

कुछ दिन बाद अमृतसर में कांग्रेस का अधिवेशन होने वाला था। गुरुकुल महाविद्यालय के प्राचार्य आचार्य नरदेव शास्त्री 'वेदतीर्थ' ने वहां जाकर मोहनदास गांधी को सारी बात बतायी; पर मुस्लिम तुष्टिकरण में

लगे हुए गांधी किसी भी तरह मुसलमानों के विरोध में जाने को तैयार नहीं हुआ। अतः 8 अगस्त, 1919 को न्यायालय द्वारा घोषित निर्णय में चार गोभक्तों को फांसी और थानेदार शिवदयाल सिंह सहित 135 लोगों को कालेपानी की सजा दी गयी। इनमें सभी जाति, वर्ग और अवस्था के लोग थे। जो लोग अन्दमान भेजे गये, उनमें से कई भारी उत्पीड़न सहते हुए वहीं मर गये। महानिर्वाणी अखाड़ा, कनखल के महंत रामगिरि जी भी प्रमुख अभियुक्तों में थे; पर वे घटना के बाद गायब हो गये और कभी पुलिस के हाथ नहीं आये। पुलिस के आतंक से डरकर अधिकांश हिन्दुओं ने गांव छोड़ दिया। अतः अगले आठ वर्ष तक कटारपुर के खेतों में कोई फसल नहीं बोई गयी।

आठ फरवरी, 1920 को उदासीन अखाड़ा, कनखल के महंत ब्रह्मदास (45 वर्ष) तथा चौधरी जानकीदास (60 वर्ष) को प्रयाग में; डा. पूर्णप्रसाद (32 वर्ष) को लखनऊ एवं मुक्खा सिंह चौहान (22 वर्ष) को वाराणसी जेल में फांसी दी गयी। चारों वीर 'गोमाता की जय' कहकर फांसी पर झूल गये। इस घटना से गोरक्षा के प्रति हिन्दुओं में भारी जागृति आयी।

मोहनदास कर्मचन्द गांधी भी अवसर को भांपकर गौरक्षा करने की बातें करने लगे। सन 1921 में गोपाष्टमी के अवसर पर पटौदी हाउस में एक सभा के अन्दर , जिसमें हकीम अजमल खान , डॉ. अन्सारी , लाला लाजपतराय , पं. मदन मोहन मालवीय आदि उपस्थित थे , तभी इन सभी लोगों के समझ एक प्रस्ताव पास कराया गया कि -

" गौहत्या को अंग्रेजी सरकार कानूनी दृष्टि से बन्द करे , नहीं तो देशव्यापी असहयोग आन्दोलन आरम्भ किया जायेगा । "

इसके बाद कांग्रेस के कार्यक्रमों में ' गौरक्षा ' सम्मेलनों का आयोजन होने लगा । (आर्गनाइजर 26 फरवरी 1995 द्वारा रमाशंकर अग्निहोत्री)

परन्तु गांधी ने यह पाखण्ड केवल हिन्दुओं को अपना अनुयायी बनाने के लिए किया था ।

15 अगस्त 1947 को भारत के आजाद होने पर देश के कोने - कोने से लाखों पत्र और तार प्रायः सभी जागरूक व्यक्तियों तथा सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा भारतीय संविधान परिषद के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के माध्यम से गांधी को भेजे गये जिसमें उन्होंने मांग की थी कि अब देश स्वतन्त्र हो गया हैं अतः गौहत्या को बन्द करा दो । तब गांधी ने कहा कि -

" राजेन्द्र बाबू ने मुझको बताया कि उनके यहाँ करीब 50 हजार पोस्ट कार्ड, 25 - 30 हजार पत्र और कई हजार तार आ गये हैं। हिन्दुस्तान में गौ - हत्या रोकने का कोई कानून बन ही नहीं सकता। इसका मतलब तो जो हिन्दू नहीं हैं, उनके साथ जबरदस्ती करना होगा...... जो आदमी अपने आप गौकुशी नहीं रोकना चाहते, उनके साथ मैं कैसे जबरदस्ती करूँ कि वह ऐसा करें। इसलिए मैं तो यह कहूँगा कि तार और पत्र भेजने का सिलसिला बन्द होना चाहिये इतना पैसा इन पर फैंक देना मुनासिब नहीं हैं। मैं तो अपनी मार्फत सारे हिन्दुस्तान को यह सुनाना चाहता हूँ कि वे सब तार और पत्र भेजना बन्द कर दें। भारतीय यूनियन कांग्रेस में मुसलमान, ईसाई आदि सभी लोग रहते हैं। अतः मैं तो यही सलाह दूँगा कि विधान - परिषद् पर इसके लिये जोर न डाला जाये। " (पुस्तक - ' धर्मपालन ' भाग - दो , प्रकाशक - सस्ता साहित्य मंडल , नई दिल्ली , पृष्ठ - 135)

गौहत्या पर कानूनी प्रतिबन्ध को अनुचित बताते हुए इसी आशय के विचार गांधी ने प्रार्थना सभा में दिये -

" हिन्दुस्तान में गौ-हत्या रोकने का कोई कानून बन ही नहीं सकता। इसका मतलब तो जो हिन्दू नहीं हैं उनके साथ जबरदस्ती करना होगा। " - ' प्रार्थना सभा ' (25 जुलाई 1947)
हिन्दुस्तान (26 जुलाई 1947) , हरिजन एवं हरिजन सेवक (26 जुलाई 1947)

अपनी 4 नवम्बर 1947 की प्रार्थना सभा में गांधी ने फिर कहा कि - *" भारत कोई हिन्दू धार्मिक राज्य नहीं हैं, इसलिए हिन्दुओं के धर्म को दूसरों पर जबरदस्ती नहीं थोपा जा सकता। मैं गौ सेवा में पूरा विश्वास रखता हूँ, परन्तु उसे कानून द्वारा बन्द नहीं किया जा सकता। "* (दिल्ली डायरी , पृष्ठ 134 से 140 तक)

इससे स्पष्ट हैं कि गांधी की गौरक्षा के प्रति कोई आस्था नहीं थी। वह केवल हिन्दुओं की भावनाओं का शौषण करने के लिए बनावटी तौर पर ही गौरक्षा की बात किया करते थे , इसलिए उपयुक्त समय आने पर देश की सनातन आस्थाओं के साथ विश्वासघात कर गये।

7 नवम्बर 1966 को गोपाष्टमी के दिन गौरक्षा से सम्बन्धित संस्थाओं ने संयुक्त रूप से संसद भवन के सामने एक विशाल प्रदर्शन का आयोजन किया जिसमें तत्कालीन सरकार से गौहत्या बन्दी का कानून बनाने की मांग की गई। इस प्रदर्शन में भारत के प्रत्येक राज्य से करीब 10 - 12 लाख गौभक्त नर - नारी , साधु - संत और छोटे - छोटे बालक - बालिकाएं भी गौमाता की हत्या बन्द कराने इस धर्मयुद्ध में आये थे।

उस समय इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री पद पर थी और गुलजारिलाल नन्दा गृहमंत्री थे । श्री नन्दा जी ने प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को परामर्श दिया कि इतनी बडी संख्या में देशभर के सर्व विचारों के जनता की मांग गौहत्या बन्दी का कानून स्वीकार करें । तब इंदिरा गांधी ने कठोरता से कहा " गौहत्या बन्दी का कानून बनाने से मुसलमान और ईसाई समाज कांग्रेस से नाराज हो जायेंगे । गौहत्या बन्दी का कानून नहीं बन सकता । " इंदिरा के न मानने पर गुलजारिलाल नन्दा ने अपने गृहमंत्री पद से त्यागपत्र दे दिया और गौभक्त भारतीयों के इतिहास में अमर हो गये ।

उधर इंदिरा गांधी ने प्रदर्शन खत्म कराने के लिए निहत्थे अहिंसक गौभक्तों प्रदर्शनकारियों पर गोली चलवा दी जिसमें अनेकों साधुओं व गौभक्तों की हत्याएँ हुई । इंदिरा गांधी ने यह नृशंश हत्याकाण्ड गौपाष्टमी के पर्व पर कराया था अतः विधि का विधान देखिये कि - इंदिरा गांधी की हत्या भी गौपाष्टमी को हुई थी , संजय गांधी की दुर्घटना में मृत्यु भी अष्टमी को हुई , राजीव गांधी की हत्या भी अष्टमी को हुई , गौहत्या के महापाप से गांधी - नेहरू परिवार का नाश हो गया ।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से अब तक 75 करोड़ से अधिक गायों को मौत के घाट उतारा जा चुका है। 1947 के बाद से संख्या 350 से 36,000 तक बढ़ गई है सरकार की अनुमति से 36,000 कत्लखाने चल रहे हैं इसके इलावा जो अवैध रूप से चल रहे हैं वो अलग है उनकी संख्या की कोई पूरी जानकारी नहीं है।

ये है मोहनदास करमचन्द गाँधी का प्रपौत्र तुषार गाँधी जो कैसे तड़प रहा हैं गौ हत्या कानून से,,

कैसे पर्दा उठता है इन गांधीवादियों की नकली "अहिंसा" से,,

ये है तुषार गाँधी (मिस्टर गाँधी का पपौत्र) जो अपने ट्वीट के माध्यम से महाराष्ट्र में "गौ हत्या" पाबन्दी पर अपना "गांधीवादियों" वाला तर्क दे रहा है
मतलब की गौ हत्या होते रहना चाहिए ताकि मुस्लिम, इसाई खुश रहे ....

क्या गाँधी व गांधीवादियों की "अहिंसा" यही थी??
गाँधीवादी अगर समझा सके ??

क्या भारत के मुस्लिम-इसाई इस बात से तभी खुश होंगे की गौ हत्या चलता रहे ?? जबकि गौ हत्या से भारत में रह रहे 83% हिन्दू आहत होते है इसका ख्याल गाँधी के पपौत्र को नहीं ??

स्वतन्त्रता प्राप्ति के इतने दिन बाद भी राष्ट्रीय स्तर पर गौहत्या बन्दी का कानून न बन पाना भारतीयों के लिए बडे ही दुःख और अपमान की बात हैं । हे परमात्मा , गांधी-नेहरू के वंशजों और गांधी के अनुयायी इन राजनेताओं को सदबुद्धि दो । भारत की प्राणाधार गौमाता की हत्या बन्दी का कानून सम्प्रदायवाद की भावना से उठकर शीघ्र बने यहीं प्रार्थना हैं ।

जब गांधी की भ्रामक राजनीतिक सोच के कारण पवित्र भगवा ध्वज राष्ट्रध्वज न बन सका

भगवा ध्वज धर्म, समृद्धि, विकास, अस्मिता, ज्ञान और विशिष्टता का प्रतीक है। इन अनेक गुणों या वस्तुओं का सम्मिलित द्योतक है अपना यह भगवा ध्वज।

भगवा ध्वज का रंग केसरिया है। यह उगते हुए सूर्य का रंग है। इसका रंग अधर्म के अंधकार को दूर करके धर्म का प्रकाश फैलाने का संदेश देता है। यह हमें आलस्य और निद्रा को त्यागकर उठ खड़े होने और अपने कर्तव्य में लग जाने की भी प्रेरणा देता है। यह हमें यह भी सिखाता है कि जिस प्रकार सूर्य स्वयं दिनभर जलकर सबको प्रकाश देता है, इसी प्रकार हम भी निस्वार्थ भाव से सभी प्राणियों की नित्य और अखंड सेवा करें।

यह यज्ञ की ज्वाला का भी रंग है। यज्ञ सभी कर्मों में श्रेष्ठतम कर्म बताया गया है। यह आन्तरिक और बाह्य पवित्रता, त्याग, वीरता, बलिदान और समस्त मानवीय मूल्यों का प्रतीक हैं। यह केसरिया रंग हमें यह भी याद दिलाता है कि केसर की तरह ही हम इस संसार को महकायें।

भगवा ध्वज में दो त्रिभुज हैं, ऊपर वाला त्रिभुज नीचेवाले त्रिभुज से कुछ छोटा है। ये त्रिभुज संसार में विविधता, सहिष्णुता, भिन्नता, असमानता और सांमजस्य के प्रतीक हैं। ये हमें सिखाते हैं कि संसार में शान्ति बनाये रखने के लिए एक दूसरे के प्रति सांमजस्य, सहअस्तित्व, सहकार, सद्भाव और सहयोग भावना होना आवश्यक है।

भगवा ध्वज आदिकाल से हमारे इतिहास का मूक साक्षी रहा है। इसमें हमारे पूर्वजों, ऋषियों और माताओं के तप की कहानियां छिपी हुई हैं। यही हमारा सबसे बड़ा गुरु, मार्गदर्शक और प्रेरक है।

यही हमारा राष्ट्र का असली प्रतिक है।

सन 1924 में कलकत्ता में सम्पन्न अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन ने भारत के राष्ट्रीय ध्वज में सनातन संस्कृति का भगवा रंग और भगवान विष्णु की गदा सम्मिलित करने का सुझाव दिया था। उसी वर्ष कांग्रेस के बेलगाँव अधिवेशन में श्री द्विजेन्द्रनाथ ठाकुर और श्री सी. एफ. एण्ड्रूज ने भी राष्ट्रीय झण्डे में भगवा रंग सम्मिलित करने का परामर्श दिया था, क्योंकि इस रंग से त्याग - भावना की अभिव्यक्ति होती है। इसके अतिरिक्त यह रंग हिन्दू योगियों, संन्यासियों तथा मुसलमान फकीरों, दरवेशों को भी समान रूप से प्रिय रंग है।

सन 1928 में कुछ सिक्खों ने लाहौर अधिवेशन के समय गांधी से मिलकर राष्ट्रीय झण्डे में अपने धर्म का प्रिय पीला रंग भी सम्मिलित करने की मांग की। इस विचार - वैषम्य की पृष्ठभूमि में 2 अप्रैल, 1931 को कराची में आयोजित कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक में राष्ट्रीय ध्वज के निर्धारण के लिए सात सदस्यों की एक झण्डा समिति नियुक्त की गयी। डॉ. पट्टाभि सीतारमैय्या को इस समिति का संयोजक बनाया गया। अन्य छह सदस्यों में जवाहर लाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल, मास्टर तारा सिंह, मौलाना आजाद, डॉ. एन. एस. हार्डिकर और डी. बी. कालेलकर को शामिल किया गया। इस झण्डा समिति ने सर्वसम्मति से अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए संस्तुति की थी, कि

" राष्ट्रीय ध्वज एक ही रंग का रहे, इस पर हम सभी सहमत हैं। सब हिन्दी लोगों का एक साथ उल्लेख करना हो, तो सबके लिए सर्वाधिक मान्य केसरिया भगवा रंग है। अन्य रंगों से यह अधिक स्वतंत्र स्वरूप का है और इस देश की पूर्व- परम्परा से अपना- सा लगता हैं। "

किन्तु यह भारतीयों का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि झण्डा समिति के इस निर्णय को भ्रामक राजनीतिक सोच रखने वाले मोहनदास गांधी ने अस्वीकृत कर दिया और इस संस्तुति को कार्यान्वित नहीं होने दिया। कांग्रेस कार्यसमिति ने यद्यपि केसरिया रंग के नये राष्ट्रीय ध्वज की रूपरेखा की प्रशंसा की, किन्तु गांधी के मार्गदर्शन में मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति पर आगे बढ़ते हुए उसने 5 - 6 अगस्त 1931 को भगवे के स्थान पर तिरंगे को ही भारत का राष्ट्रीय ध्वज घोषित कर दिया।

पृथक मताधिकार और द्विराष्ट्रवाद के प्रथम प्रणेता: गांधी

मुस्लिम समाज की ओर से इस व्यापक विरोध से चिंतित होकर गांधी जी ने 9 से 11 जून, 1931 तक बम्बई में आयोजित कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक के सामने प्रस्ताव रखा कि साम्प्रदायिक वैमनस्य की समस्या का कोई हल न निकल पाने के कारण अब मुझे लंदन जाने का विचार त्याग देना चाहिए। उन्हीं दिनों गांधी जी पंजाब के दौरे पर गए। वहां लुधियाना में गांधी जी के निवास पर 10-15 हजार लोगों की भीड़ जमा हो गई। मास्टर तारा सिंह की अध्यक्षता वाली सिख लीग ने बार-बार तार देकर गांधी जी को पंजाब बुलाया था। उसके अध्यक्ष मास्टर तारा सिंह से गांधी जी ने पूछा कि मुझे क्यों बुलाया। तारा सिंह ने कहा कि 'राष्ट्रीय स्तर पर आप जो करवाएं हम करने को तैयार हैं, पर ***आप तो मुसलमानों को सब कुछ देने की सलाह देते हैं। हम लोगों को यह सब मुसलमानों के कौमी दबाव के सामने झुकने जैसा लगता है, जो हम सहन नहीं कर सकते।*** साम्प्रदायिक दृष्टि से लिए गये इस निर्णय को हम स्वीकार नहीं कर सकते।' इसके उत्तर में गांधी जी ने कहा 'यदि एक पूरी कौम किसी वस्तु के बगैर संतुष्ट होने को तैयार न हो और हमें उनके साथ ही रहना हो तो उनकी बात मानकर ही तो उनको जीता जा सकता है न? दूसरा उपाय क्या है?' सिखों ने कहा, 'दूसरा उपाय यह है कि उनके समान दबाव डालकर वे जो भी मांगेंगे, वही हम भी मांगेंगे।' गांधी जी ने कहा, ***'एक कौम को उसकी मांग के अनुसार दे देने में ही मैं राष्ट्र की एकता मानता हूं। आप राष्ट्रीय ध्वज के लिए भी आपत्ति करते हैं। आपको अपना रंग राष्ट्रीय ध्वज में चाहिए। आज का राष्ट्रीय ध्वज मेरी कल्पना के अनुरूप है। उस ध्वज में पूरे देश का त्याग सम्मिलित है। फिर भी एक कौम के संतोष के लिए, आपके लिए ही मैं उसे बदलने के लिए तैयार हुआ हूं, तो उसी प्रकार मुस्लिम कौम के लिए मैं आपको त्याग करने के लिए क्यों नहीं कह सकता?*** (महादेव देसाई की डायरी, खंड 12, पृ.253-254)

क्या सचमुच गांधी जी मानते थे कि मुसलमानों की पृथक मताधिकार की मांग मान लेने से भारत में राष्ट्रीय एकता स्थापित होगी? यदि ऐसा ही था तो कांग्रेस के नरमदलीय नेतृत्व ने भी 1909 के एक्ट में मुसलमानों को दिये गये पृथक मताधिकार के निर्णय को 1916 के लखनऊ समझौते तक स्वीकार क्यों नहीं किया? और 1916 में स्वीकार किया तो भी एक अल्पकालीन आपद् धर्म के रूप में? पृथक मताधिकार के विभाजनकारी दुष्परिणाम को ध्यान में रखकर लाला लाजपत राय ने 1924 नवम्बर- दिसंबर में अंग्रेजी दैनिक ट्रिब्यून में प्रकाशित अपनी लम्बी लेखमाला में भविष्यवाणी की थी कि यदि पृथक मताधिकार बना

रहा और मुस्लिम राजनीति का चरित्र वही रहा जो आज है, तो भारत का विभाजन अवश्यंभावी है।

तभी उन्होंने पूर्वी और पश्चिमी भारत में चार मुस्लिम राज्यों की स्थापना की चेतावनी दे दी थी। पर तब से अब तक भारतीय राजनीति का चरित्र बहुत बदल चुका था और लंदन पहुंचते ही गांधी जी ने यह कहना आरंभ कर दिया कि ऐतिहासिक कारणों से मैं मुसलमानों और सिखों के लिए पृथक मताधिकार देने को तैयार हूं। इसका अर्थ हुआ कि जाने या अनजाने उन्होंने जिन्ना के द्विराष्ट्रवाद के सिद्धांत को स्वीकार कर लिया। औए ये स्वीकार कर गांधी ने भारत को दुर्दशा की ओर धकेलने के लिए पहला धक्का दिया।

क्या गांधी को सचमुच सेक्स की बुरी लत थी?

मोहनदास करमचंद गांधी के सेक्स जीवन पर एक बार फिर से बहस छिड़ गई है. लंदन के प्रतिष्ठित अख़बार "द टाइम्स" के मुताबिक गांधी को कभी भगवान की तरह पूजने वाली 82 वर्षीया गांधीवादी इतिहासकार कुसुम वदगामा ने कहा है कि गांधी को सेक्स की बुरी लत थी, वह आश्रम की कई महिलाओं के साथ निर्वस्त्र सोते थे, वह इतने ज़्यादा कामुक थे कि ब्रह्मचर्य के प्रयोग और संयम परखने के बहाने चाचा अमृतलाल तुलसीदास गांधी की पोती और जयसुखलाल की बेटी मनुबेन गांधी के साथ सोने लगे थे. ये आरोप बेहद सनसनीख़ेज़ हैं क्योंकि किशोरावस्था में कुसुम भी गांधी की अनुयायी रही हैं. कुसुम, दरअसल, लंदन में पार्लियामेंट स्क्वॉयर पर गांधी की प्रतिमा लगाने का विरोध कर रही हैं. बहरहाल, दुनिया भर में कुसुम के इंटरव्यू छप रहे हैं.

वैसे तो गांधी के सेक्स जीवन पर अब तक अनेक किताबें लिखी जा चुकी हैं. जो ख़ासी चर्चित भी हुई हैं. जिनमें गांधी को असामान्य सेक्स बीहैवियर वाला अर्द्ध-दमित सेक्स-मैनियॉक कहा गया है.

देश के सबसे प्रतिष्ठित लाइब्रेरियन गिरिजा कुमार ने गहन अध्ययन और गांधी से जुड़े दस्तावेज़ों के रिसर्च के बाद 2006 में "ब्रह्मचर्य गांधी ऐंड हिज़ वीमेन असोसिएट्स" में डेढ़ दर्जन महिलाओं का ब्यौरा दिया है जो ब्रह्मचर्य में सहयोगी थीं और गांधी के साथ निर्वस्त्र सोती- नहाती और उन्हें मसाज़ करती थीं. इनमें मनु, आभा गांधी, आभा की बहन बीना पटेल, सुशीला नायर, प्रभावती (जयप्रकाश नारायण की पत्नी), राजकुमारी अमृतकौर, बीवी अमुतुसलाम, लीलावती आसर, प्रेमाबहन कंटक, मिली ग्राहम पोलक,

कंचन शाह, रेहाना तैयबजी शामिल हैं. प्रभावती ने तो आश्रम में रहने के लिए पति जेपी को ही छोड़ दिया था. इससे जेपी का गांधी से ख़ासा विवाद हो गया था.

तक़रीबन दो दशक तक गांधी के व्यक्तिगत सहयोगी रहे निर्मल कुमार बोस ने अपनी बेहद चर्चित किताब "माई डेज़ विद गांधी" में गांधी का अपना संयम परखने के लिए आश्रम की महिलाओं के साथ निर्वस्त्र होकर सोने और मसाज़ करवाने का ज़िक्र किया है. निर्मल बोस ने नोआखली की एक ख़ास घटना का उल्लेख करते हुए लिखा है, "एक दिन सुबह-सुबह जब मैं गांधी के शयन कक्ष में पहुंचा तो देख रहा हूं, सुशीला नायर रो रही हैं और महात्मा दीवार में अपना सिर पटक रहे हैं." उसके बाद बोस गांधी के ब्रह्मचर्य के प्रयोग का खुला विरोध करने लगे. जब गांधी ने उनकी बात नहीं मानी तो बोस ने अपने आप को उनसे अलग कर लिया.

क्या कभी किसी ने ये सोचा है, इतने बड़े कांग्रेसी नेता का बेटा क्यों शराबी हो गया था ?

...कारण जानिए

51 साल की उम्र में मोहनदास गांधी ने दूसरी शादी की ज़िद की, रबिन्द्र नाथ टैगोर की भांजी से प्यार हो गया था... जो उसके बेटे को पसंद नही था.

इसलिए इतने सारे मर्द लोगों के होते हुए , वो अपनी भार दो लड़कियों के कंधे में डाल कर हर जगह आता जाता रहता था...

हाथ में हिन्दू धर्म की भगवत गीता को पकड़ कर मन में इतनी घटिया भावना बापू रखता था...
इसे देख कर गाँधी के बेटे हरि दास गाँधी को मोहनदास करम चंद गाँधी से नफरत हो गई थी

"जब बंगाल में दंगे हो रहे थे गांधी ने 18 साल की मनु को बुलाया और कहा "अगर तुम साथ नहीं होती तो मुस्लिम चरमपंथी हमारा कत्ल कर देते। आओ आज से हम दोनों निर्वस्त्र होकर एक दूसरे के साथ सोएं और अपने शुद्ध होने और ब्रह्मचर्य का परीक्षण करें।".

गांधी के साथ शारीरिक संबंधों के बारे हमेशा अस्पष्ट बात कही। जब भी पूछा गया तब केवल यही कहा कि वह ब्रह्मचर्य के प्रयोग के सिद्धांतों का अभिन्न अंग है।".

=======================================

15 साल की उम्र में गाँधी जी वेश्या की चोखट से हिम्मत न जुटा पाने के कारण वापस लौट आये .

16 साल की उम्र में पत्नी से सम्भोग की इच्छा से मुक्त नहीं हो पाए जब उनके पिता मृत्यु शैया पर थे .

21 साल की उम्र में फिर उनका मन पराई स्त्री को देखकर विकारग्रस्त होता है .

28 साल की उम्र में हब्सी स्त्री के पास जाते है लेकिन शर्मसार होकर वापिस आ जाते है .

31 साल की उम्र में 1 बच्चे के पिता बन जाते है .

40 साल की उम्र में अपने दोस्त हेनरी पोलक की पत्नी के साथ आत्मीयता महसूस करते है .

41 साल की उम्र में मोड नाम की लड़की से प्रभवित होते है .

48 की उम्र में 22 साल की एस्थर फेरिंग के मोहजाल में फंस जाते है .

51 की उम्र में 48 साल की सरला देवी चौधरानी के प्रेम में पड़ते है .

56 की उम्र में 33 साल की मेडलिन स्लेड के प्रेम में फंसते है .

60 की उम्र में 18 साल की महाराष्ट्रियन प्रेमा के माया जाल में फंस जाते है .

64 की उम्र में 24 साल की अमेरिका की नीला नागिनी के संपर्क में आते है .

65 की उम्र में 35 साल की जर्मन महिला मार्गरेट स्पीगल को कपडे पहनना सिखाते है .

69 की उम्र में 18 साल की डॉक्टर शुशीला नैयर से नग्न होकर मालिश करते है.

72 की उम्र में बाल विधवा लीलावती आसर,पटियाला के बड़े जमींदार की बेटी अम्तुस्स्लाम ,कपूरथला खानदान की राजकुमारी अमृत कौर तथा मशहूर समाजवादी नेता जयप्रकाश नारायण की पत्नी प्रभावती जैसी महिलाओ के साथ सोते है .

76 की उम्र में 16 साल की आभा .वीणा और कंचन नाम की युवतिओं को नग्न होने को कहते है . जिस पर ये लडकिया कहती है की उन्हें ब्रह्मचर्य के बजाय सम्भोग की जरूरत है .

77 की उम्र में महात्मा गाँधी अपनी पोती मनु की साथ नोआखाली की सर्द रातें शरीर को गर्म रखने के लिए नग्न सोकर गुजारते है . और

79 के गाँधी जी महात्मा जीवन के अंतिम क्षणों तक आभा और मनु के साथ एक साथ बिस्तर पर सोते है॥

अनेक लड़कियों के साथ निर्वस्त्र सोते थे बापू

सहयात्री मनुबेन ने खोली पोल, आश्रम में चल रहे थे प्रेम प्रसंग

बापू के ब्रह्मचर्य पर लेख से लोग स्तब्ध

◆ विवादित प्रयोग पर चर्चा से बच रहे गांधीवादी

शत्रुघ्न शर्मा, अहमदाबाद

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के ब्रह्मचर्य प्रयोग को लेकर एक

पत्रिका में छपी कवर स्टोरी से गांधीवादी और गांधी संस्थाओं से जुड़े लोग स्तब्ध हैं। गांधीजी की हत्या के बाद उनकी अंतरंग सहयात्री मनुबेन गांधी, आभा गांधी व सुशीला नैयर संग उनकी अंतरंगता की बातें छन-छनकर पहले भी आती रही है लेकिन मनुबेन की डायरी से अब इनकी पुष्टि हो रही है। हालांकि बापू के ब्रह्मचर्य प्रयोग की बात तो गांधीवादी स्वीकारते हैं,लेकिन इसी मुद्दे पर सरदार पटेल, गोपाल कृष्ण गोखले, देवदास गांधी की नाराजगी के विषय पर वे कुछ भी बोलने को तैयार नहीं हैं। साबरमती स्थित गांधी संग्रहालय आजादी की लड़ाई का ही नहीं महात्मा गांधी की जीवन शैली व दर्शन के प्रयोगों का भी साक्षी रहा है।

मनुबेन की डायरी के मुताबिक, बापू ने सत्य,अहिंसा के साथ- साथ ब्रह्मचर्य पालन की सीख देते हुए खुद इस व्रत को अपना लिया था। इस व्रत के दौरान उन्होंने अपनी सहचरी मनु, आभा, सुशीला नैयर, बीबी अम्तुस्सलाम, वीना, कंचन, लीलावती, मीरा आदि के साथ निर्वस्त्र सहशयन कर ब्रह्मचर्य संकल्प को आजमाया। आश्रम में रहने वाली लड़कियों में बापू संग सोने को लेकर होड़ और ईर्ष्या मची रहती थी। उनका यह प्रयोग कईयों को रास नहीं आया। सरदार वल्लभ पटेल ने 25 जनवरी 1947 को बापू को पत्र लिखा था, जिसमें उनके प्रयोग को भयंकर भूल बताते हुए उसे रोकने को कहा था। पटेल ने लिखा था कि ऐसे प्रयोग से उनके अनुयायियों को गहरी पीड़ा होती है। बापू के ब्रह्मचर्य प्रयोग पर आए ताजा आलेख के बारे में गांधी आश्रम के ट्रस्टी अमृत मोदी कहते हैं कि अभिव्यक्ति की आजादी है,लेख पढ़ा नहीं इसलिए टिप्पणी नहीं कर सकता, लेकिन इतना जरूर है कि गांधी जी के बारे में आधा सच ही छापा जाता है। बापू के सचिव महादेव देसाई के पुत्र और गांधी कथाकार नारण भाई देसाई ने कहा, बापू ने ब्रह्मचर्य व्रत पर काफी कुछ लिखा है। हालांकि बापू के प्रयोग पर सरदार पटेल, जवाहर लाल नेहरु,गोपालकृष्ण गोखले आदि के खफा होने के बारे में कोई जानकारी नहीं है।

आश्रम में चल रहे थे प्रेम-प्रसंग

मनुबेन की डायरी से साफ है कि गांधी जी को भी इस लेखन की जानकारी थी। पहले उन्होंने इस डायरी को ध्यानपूर्वक रखने की सलाह दी। वह अपने सचिव प्यारेलाल से लेखन की भाषा और तथ्यों में संशोधन कराना चाहते थे।
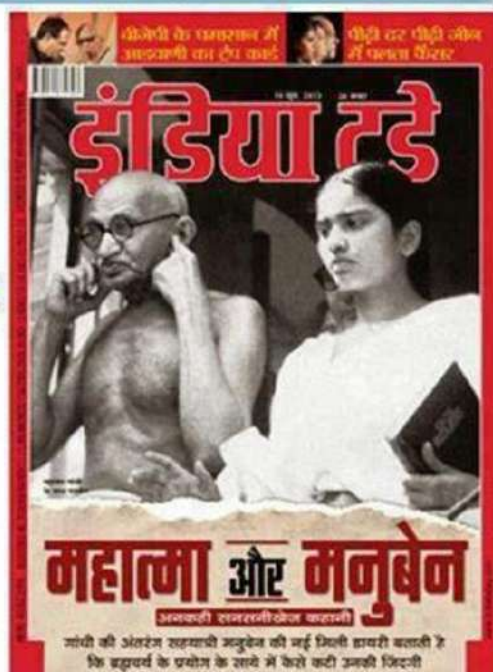
गांधी के ब्रह्मचर्य प्रयोग पर मनुबेन की डायरी के अंश

इंडिया टुडे

मनुबेन की डायरी के अंश: दुनिया जो कहती है वह कहती रहे

26 June, 2013

10 नवंबर, 1943

आगा खां पैलेस, पुणे

एनिमिया के शिकार बापू आज सुशीलाबेन के साथ नहाते समय बेहोश हो गए. फिर सुशीलाबेन ने एक हाथ से बापू को पकड़ा और दूसरे हाथ से कपड़े पहने और फिर उन्हें बाहर लेकर आईं.

21 दिसंबर, 1946

श्रीरामपुर, बिहार

आज रात जब बापू, सुशीलाबेन और मैं एक ही पलंग पर सो रहे थे तो उन्होंने मुझे गले से लगाया और प्यार से थपथपाया. उन्होंने बड़े ही प्यार से मुझे सुला दिया. उन्होंने लंबे समय बाद मेरा आलिंगन किया था.

फिर बापू ने अपने साथ सोने के बावजूद (यौन इच्छाओं के मामले में) मासूम बनी रहने के लिए मेरी प्रशंसा की. लेकिन दूसरी लड़कियों के साथ ऐसा नहीं हुआ. वीना, कंचन और लीलावती (गांधी की अन्य महिला सहयोगी) ने मुझसे कहा था कि वे उनके (गांधी के) साथ नहीं सो पाएंगी.

1 जनवरी, 1947

कथुरी, बिहार

सुशीलाबेन मुझे अपने भाई प्यारेलाल से शादी करने के लिए कह रही हैं. उन्होंने मुझसे कहा कि अगर मैं उनके भाई से शादी कर लूं तो ही वे नर्स बनने में मेरी मदद करेंगी. लेकिन मैंने उन्हें साफ मना कर दिया और सारी बात बापू को बता दी. बापू ने मुझसे कहा कि सुशीला अपने होश में नहीं है.

उन्होंने कहा कि कुछ दिन पहले तक वह उनके सामने निर्वस्त्र नहाती थी और उनके साथ सोया भी करती थी. लेकिन अब उन्हें (गांधी को) मेरा सहारा लेना पड़ रहा है. उन्होंने कहा कि मैं हर स्थिति में निष्कलंक हूं और धीरज बनाए रखूं (ब्रह्मचर्य के मामले में).

2 फरवरी, 1947

दशधरिया, बिहार

बापू ने सुबह की प्रार्थना के दौरान अपने अनुयायियों को बताया कि वे मेरे साथ ब्रह्मचर्य के प्रयोग कर रहे हैं. फिर उन्होंने मुझे समझाया कि सबके सामने यह बात क्यों कही. मुझे बहुत राहत महसूस हुई क्योंकि अब लोगों की जुबान पर ताले लग जाएंगे. मैंने अपने आप से कहा कि अब मुझे किसी की भी परवाह नहीं है. दुनिया को जो कहना है वह कहती रहे.

"प्यारेलालजी मेरे प्यार में दीवाने हैं"

28 दिसंबर, 1946

श्रीरामपुर, बिहार

सुशीलाबेन ने आज मुझसे पूछा कि मैं बापू के साथ क्यों सो रही थी और कहा कि मुझे इसके गंभीर नतीजे भुगतने होंगे. उन्होंने मुझसे अपने भाई प्यारेलाल के साथ विवाह के प्रस्ताव पर फिर से विचार करने को भी कहा और मैंने कह दिया कि मुझे उनमें कोई दिलचस्पी नहीं है, और इस बारे में वे आइंदा फिर कभी बात न करें. मैंने उन्हें बता दिया कि मुझे बापूजी पर पूरा भरोसा है और मैं उन्हें अपनी मां की तरह मानती हूं.

1 जनवरी, 1947

श्रीरामपुर, बिहार

प्यारेलाल जी मेरे प्रेम में दीवाने हैं और मुझ पर शादी करने के लिए दबाव डाल रहे हैं, लेकिन मैं कतई तैयार नहीं हूं क्योंकि उम्र, ज्ञान, शिक्षा और नैन-नक्श में भी वे मेरे लायक नहीं हैं. जब मैंने यह बात बापू को बताई तो उन्होंने कहा कि प्यारेलाल सबसे ज्यादा मेरे गुणों के प्रशंसक हैं. बापू ने कहा कि प्यारेलाल ने उनसे भी कहा था कि मैं बहुत गुणी हूं.

31 जनवरी, 1947

नवग्राम, बिहार

ब्रह्मचर्य के प्रयोगों पर विवाद गंभीर रूप अख्तियार करता जा रहा है. मुझे संदेह है कि इसके पीछे (अफवाहें फैलाने के) अम्तुस्सलामबेन, सुशीलाबेन और कनुभाई (गांधी के भतीजे) का हाथ था. मैंने जब बापू से यह बात कही तो वे मुझसे सहमत होते हुए कहने लगे कि पता नहीं, सुशीला को इतनी जलन क्यों हो रही है? असल में कल जब सुशीलाबेन मुझसे इस बारे में बात कर रही थीं तो मुझे लगा कि वे पूरा जोर लगाकर चिल्ला रही थीं.

बापू ने मुझसे कहा कि अगर मैं इस प्रयोग में बेदाग निकल आई तो मेरा चरित्र आसमान चूमने लगेगा, मुझे जीवन में एक बड़ा सबक मिलेगा और मेरे सिर पर मंडराते विवादों के सारे बादल छंट जाएंगे. बापू का कहना था कि यह उनके ब्रह्मचर्य का यज्ञ है और मैं उसका पवित्र हिस्सा हूं. उन्होंने कहा कि ईश्वर से यही प्रार्थना है कि उन्हें शुद्ध रखे, उन्हें सत्य का साथ देने की शक्ति दे और निर्भय बनाए. उन्होंने मुझसे कहा कि अगर सब हमारा साथ छोड़ जाएं, तब भी ईश्वर के आशीर्वाद से हम यह प्रयोग सफलतापूर्वक करेंगे और फिर इस महापरीक्षा के बारे में सारी दुनिया को बताएंगे.

2 फरवरी, 1947

अमीषापाड़ा, बिहार

आज बापू ने मेरी डायरी देखी और मुझसे कहा कि मैं इसका ध्यान रखूं ताकि यह अनजान लोगों के हाथों में न पड़ जाए क्योंकि वे इसमें लिखी बातों का गलत उपयोग कर सकते हैं, हालांकि ब्रह्मचर्य के प्रयोगों के बारे में हमें कुछ छिपाना नहीं है. उन्होंने कहा कि अगर अचानक उनकी मृत्यु हो जाए तो भी यह डायरी समाज को सच बताने में बहुत सहायक होगी. उन्होंने कहा कि यह डायरी मेरे लिए भी बहुत उपयोगी साबित होगी.

और फिर बापू ने मुझसे कहा कि अगर मुझे कोई आपत्ति न हो तो डायरी की कुछ ताजा प्रविष्टियां प्यारेलालजी को दिखा दूं ताकि वे उसकी भाषा सुधार दें और तथ्यों को क्रमवार ढंग से लगा दें. हालांकि मैंने साफ मना कर दिया क्योंकि मुझे लगा कि अगर प्यारेलाल ने इस डायरी को देख लिया तो इसकी सारी बातें उनकी बहन सुशीलाबेन तक जरूर पहुंच जाएंगी और उससे आपसी वैमनस्य में और इजाफा ही होगा.

7 फरवरी, 1947

प्रसादपुर, बिहार

ब्रह्मचर्य के प्रयोगों को लेकर माहौल लगातार गर्माता ही जा रहा है. अमृतलाल ठक्कर (गांधी और गोपालकृष्ण गोखले के साथ जुड़े रहे समाजसेवी) आज आए और अपने साथ बहुत सारी डाक लाए जो इस मुद्दे पर बहुत "गर्म" थी. और इन पत्रों को पढ़कर मैं हिल गई.

24 फरवरी, 1947

हेमचर, बिहार

आज मैं बहुत दुखी थी. लेकिन बापू ने कहा कि वे मेरे चेहरे पर मुस्कान दौड़ते देखना चाहते हैं. उन्होंने कहा कि उनकी जगह अगर कोई और होता तो इस मुद्दे पर किशोरलाल मशरूवाला, सरदार पटेल और देवदास गांधी के तीखे पत्र पढ़कर लगभग पागल जैसा हो जाता. लेकिन उन्हें इस सबसे बिलकुल भी फर्क नहीं पड़ा. एक और बात. आज बापू ने अम्तुस्सलामबेन को एक बहुत कड़ा पत्र लिखकर कहा कि उनका जो पत्र मिला है उससे जाहिर होता है कि वे इस बात से नाराज हैं कि ब्रह्मचर्य के उनके प्रयोग उनके साथ शुरू नहीं हुए. उन्होंने लिखा कि इस बारे में उनके लिए खेद करना वाकई शर्म की बात है. उन्होंने अम्तुस्सलामबेन से कहा कि अगर वे समझ सकें तो वे समझना चाहते हैं कि आखिर वे कहना क्या चाहती हैं? बापू ने उन्हें लिखा कि यह शुद्धि का यज्ञ है.

26 फरवरी, 1947

हेमचर, बिहार

आज जब अम्तुस्सलाम बेन ने मुझसे प्यारेलाल से शादी करने को कहा तो मुझे बहुत गुस्सा आया और मैंने कह दिया कि अगर उन्हें उनकी इतनी चिंता है तो वे स्वयं उनसे शादी क्यों नहीं कर लेतीं? मैंने उनसे कह दिया कि ब्रह्मचर्य के ये प्रयोग उनके साथ शुरू हुए थे और अब अखबारों में मेरे फोटो छपते देखकर उन्हें मुझसे जलन होती है और मेरी लोकप्रियता उन्हें अच्छी नहीं लगती.

18 मार्च, 1947

मसौढ़ी, बिहार

आज बापू ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात का खुलासा किया. मैंने उनसे पूछा कि क्या सुशीलाबेन भी उनके साथ निर्वस्त्र सो चुकी है क्योंकि मैंने जब उनसे इस बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि वे प्रयोगों का कभी भी हिस्सा नहीं बनी और उनके साथ कभी निर्वस्त्र नहीं सोई. बापू ने कहा कि सुशीला सच नहीं कह रही क्योंकि वह बारडोली (1939 में जब पहली बार वे बतौर फिजीशियन उनके साथ जुड़ी थीं) के अलावा आगा खां पैलेस (पुणे) में उनके साथ सो चुकी थी. बापू ने बताया कि वह उनकी मौजूदगी में स्नान भी कर चुकी है. फिर बापू ने कहा कि जब सारी बातें मुझे पता ही हैं तो मैं यह सब क्यों पूछ रही हूं? बापू ने कहा कि सुशीला बहुत दुखी थी और उसका दिमाग अस्थिर था और इसलिए वे नहीं चाहते थे कि वह इस सब पर कोई सफाई दे.

"मैंने बापू से आग्रह किया कि मुझे अलग सोने दें"

25 फरवरी, 1947

हेमचर, बिहार

बापू ने बापा (अमृतलाल ठक्कर को सभी ठक्कर बापा कहते थे) से कहा कि ब्रह्मचर्य धर्म के पांच नियमों में से एक है और वे उसकी परीक्षा को पास करने की भरसक कोशिश कर रहे हैं. उन्होंने कहा कि यह उनकी आत्मशुद्धि का यज्ञ है और वे इसे सिर्फ इसलिए नहीं रोक सकते क्योंकि जनभावनाएं पूरी तरह इसके खिलाफ हैं. इस पर बापा ने कहा कि ब्रह्मचर्य की उनकी परिभाषा आम आदमी की परिभाषा से एकदम अलग है और पूछा कि अगर मुस्लिम लीग को इसकी भनक भी लग गई और उसने इस बारे में लांछन लगाए तो क्या होगा? बापू ने जवाब दिया कि किसी के डर से वे अपने धर्म को कतई नहीं छोड़ेंगे और उन्होंने बिरला (उद्योगपति और जाने-माने गांधीवादी जी.डी. बिरला) को भी यह बता दिया था कि अगर प्रयोग के दौरान उनका मन अशुद्ध रहा तो वे पाखंडी कहलाएंगे और वे तकलीफदेह मौत को प्राप्त होंगे. बापू ने बापा से कहा कि अगर वल्लभभाई (पटेल) या किशोर भाई (मशरूवाला) भी उनका साथ छोड़ देंगे तो भी वे अपने प्रयोग जारी रखेंगे.

2 मार्च, 1947

हेमचर, बिहार

आज बापू को बापा का एक गुप्त पत्र मिला. उन्होंने इसे मुझे पढने़ को दिया. यह पत्र दिल को इतना छू लेने वाला था कि मैंने बापू से आग्रह किया कि बापा को संतुष्ट करने के लिए आज से मुझे अलग सोने की अनुमति दें. जब मैंने बापा को अपने इस फैसले के बारे में बताया तो उन्होंने कहा कि बापू और मुझसे बात करने के बाद उन्हें प्रयोग के उद्देश्य के बारे में एकदम संतोष हो गया था लेकिन अलग सोने और प्रयोग समाप्त करने का मेरा फैसला पूरी तरह सही था. उसके बाद बापा ने किशोरलाल मशरूवाला और देवदास गांधी को पत्र लिखकर सूचित किया कि वह अध्याय अब खत्म हो गया है.

"बापू सिर्फ मेरे लिए मां समान थे"

18 जनवरी, 1947

बिरला हाउस, दिल्ली

बापू ने कहा कि उन्होंने लंबे समय बाद मेरी डायरी को पढ़ा और बहुत ही अच्छा महसूस किया. वे बोले कि मेरी परीक्षा खत्म हुई और उनके जीवन में मेरी जैसी जहीन लड़की कभी नहीं आई और यही वजह थी कि वे खुद को सिर्फ मेरी मां कहते थे. बापू ने कहा: "आभा या सुशीला, प्यारेलाल या कनु, मैं किसी की परवाह क्यों करूं?

वह लड़की (आभा) मुझे बेवकूफ बना रही है बल्कि सच यह है कि वह खुद को ठग रही है. इस महान यज्ञ में मैं तुम्हारे अभूतपूर्व योगदान का हृदय से आदर करता हूं." बापू ने फिर मुझसे कहा,

"तुम्हारी सिर्फ यही भूल है कि तुमने अपना शरीर नष्ट कर लिया है. शारीरिक थकान से ज्यादा तुम्हारी शंकालु प्रवृत्ति तुम्हें खा रही है. मैं खुद को तभी विजेता मानूंगा जब तुम अभी जैसी 70 वर्ष की दिखती हो, उसकी बजाए 17 बरस की दिखो."

2 अक्टूबर, 1947

बिरला हाउस, दिल्ली

आज बापू का जन्मदिन था. मैंने ईश्वर से प्रार्थना की कि या तो उन्हें इस दावानल (विभाजन के दंगों की आग जिसे गांधीजी बुझाना चाहते थे) में विजयी बना दे या उन्हें अपने पास बुला ले. बापू ने बहुत जोर लगाया, लेकिन मैं उनकी पीड़ा और नहीं देख सकती. हे ईश्वर! आखिर तू कब तक बापू की परीक्षा लेता रहेगा? मैं रात को सोते या जागते हुए यही प्रार्थना करती हूं कि यह अंतिम सद्कार्य (सांप्रदायिक दंगे समाप्त कराने का) बापू के हाथों संपन्न हो जाए.

14 नवंबर, 1947

बिरला हाउस, दिल्ली

मैं कई दिनों से बुरी तरह अशांत हूं. बापू ने जब यह देखा तो कहा कि अपने मन की बात कह दो. उन्होंने कहा कि मैं कइयों का पितामह और पिता हूं और सिर्फ तुम्हारी माता हूं. मैंने बापू को बताया कि इन दिनों आभा मुझसे बहुत बेरुखी से पेश आ रही है. यही वजह है. बापू ने कहा कि उन्हें खुशी हुई कि मैंने मन की बात उन्हें बता दी लेकिन अगर न बताती तो भी वे मेरे मन की अवस्था समझ सकते थे. उन्होंने कहा कि मैं अंतिम क्षण तक उनके साथ रहूंगी पर आभा संग ऐसा नहीं होगा. इसलिए वह जो चाहे उसे करने दो. उन्होंने मुझे बधाई दी कि मैंने न सिर्फ उनकी बल्कि औरों की भी पूरी निष्ठा से सेवा की है.

18 नवंबर, 1947,

बिरला हाउस, दिल्ली

आज जब मैं बापू को स्नान करवा रही थी तो वे मुझ पर बहुत नाराज हुए क्योंकि मैंने उनके साथ शाम को घूमना बंद कर दिया था. उन्होंने बहुत कड़वे शब्दों का इस्तेमाल किया. उन्होंने कहा, "जब तुम जीते जी मेरी बात नहीं मानतीं तो मेरे मरने के बाद क्या करोगी? क्या तुम मेरे मरने का इंतजार कर रही हो?" यह शब्द सुनकर मैं सन्न रह गई और जवाब देने की हिम्मत नहीं जुटा पाई.

गांधी कहता था कि...... खुजराहो की मूर्तियों को ढकवा दो, क्योंकि इनसे वासना की गंध आती है। जबकि गांधी जो ब्रह्मचर्य के प्रयोग कर रहे थे प्राचीन विद्या के नाम पर, उनका रास्ता तो खुजराहो से होकर ही जाता हैं, जो व्यक्ति बाहर की वासना से मुक्त न हो सका, वह अन्दर की वासना से मुक्त कैसे हो सकता हैं ? इसी कारण मोहनदास गांधी की दमित मानसिकता समय- समय पर विद्रोह करती रही।

51 वर्ष की उम्र में मोहनदास गांधी टैगोर की भांजी सरला से करना चाहते थे दूसरी शादी

अनेकों पुस्तकों में मोहनदास गांधी से कई स्त्रियों के संबधों का दावा किया गया है। लेकिन इसमें सबसे चर्चास्पद मामला रहा है, मोहनदास गांधी और सरला देवी के संबंधों को लेकर। मोहनदास गांधी और सरलादेवी शादी करना चाहते थे। उल्लेखनीय है कि सरलादेवी रवींद्रनाथ टैगोर की बड़ी बहन की बेटी थीं। गांधी के 71 वर्षीय पोते राजमोहन गांधी ने अपनी एक पुस्तक में लिखा है कि अपनी विवेकबुद्धि के लिए प्रख्यात मोहनदास गांधी विवाहित और चार संतानों के पिता होने के बावजूद भी सरलादेवी के प्रेम में पड़ गए थे। इतना ही नहीं, वे सरला से शादी करने के लिए भी तैयार हो गए थे।

सरलादेवी गांधीजी की पत्नी कस्तूरबा की तुलना में काफी प्रतिभाशाली और बुद्धिमान थीं और वे स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय थीं। परिवार और राष्ट्रहित के लिए उन पर भी गांधीजी से संबंधों पर पूर्ण विराम लगाने का दबाव डाला गया। राजमोहन के अनुसार गांधी का यह प्रेम प्रकरण सीक्रेट नहीं था, बल्कि यह बात दोनों परिवारों में सबको मालूम थी। हालांकि यह बात अलग है कि सरलादेवी ने अपनी आत्मकथा में इस बात का जिक्र नहीं किया है।

सरलादेवी का दीपक चौधरी नामक एक बेटा था। सरलादेवी के मोहपाश में बंधे मोहनदास गांधी ने तो दीपक के लिए जवाहरलाल नेहरू से बेटी इंदिरा गांधी का हाथ भी मांगा था। लेकिन नेहरू ने इसके लिए स्पष्ट मना कर दिया था।

सरलादेवी के पति चौधरी राम भाजी दत्त स्वतंत्रता संग्राम में मुख्य रूप से सक्रिय थे। जब वे जेल में थे, तब उन्होंने ही सरलादेवी को मोहनदास गांधी के घर पर रहने के लिए कहा था। बताया जाता है कि इसी बीच मोहनदास गांधी और सरलादेवी एक-दूसरे के नजदीक आए थे। इन्होंने तो 'आध्यात्मिक लग्न' कर लेने का आयोजन भी कर लिया था, जिसका गांधीजी के बेटे देवदास गांधी ने भारी विरोध किया था।

सरलादेवी के अलावा गांधी के कुछ अन्य स्त्रियों से संबंधों का भी दावा किया जाता है। इसमें ब्रिटिश एडमिरल की बेटी मेडेलीन स्लेड, सुशीला नायर और दो मानसपुत्रियों मनु तथा आभा गांधी का भी नाम शामिल है। इतना ही नहीं, मोहनदास गांधी अपने ब्रह्मचर्य की परीक्षा लेने के लिए सुशीला नायर और टीनएज मनु तथा आभा के साथ सह-स्नान और नग्न होकर सोने के प्रयोग भी किया करते थे। मोहनदास

गांधी के ये प्रयोग भारी विवाद का मुद्दा भी बना था। इसे लेकर आश्रमवासियों और उनके परिवारजनों ने उनसे नाराजगी भी प्रकट की थी।

गांधी की पारिवारिक पृष्ठभूमि

मोहनदास गांधी के पिता करमचन्द गांधी विषयासक्त थे, उन्होंने चार विवाह किये थे। पहली पत्नी से दो पुत्रियाँ थीं, और अन्तिम पत्नी पुतलीबाई से एक पुत्री और तीन पुत्र हुए, जिनमें मोहनदास गांधी अन्तिम था।

गांधी ने अपनी आत्मकथा में लिखा हैं - ***"मैं पितृभक्त तो था ही, पर विषय-भक्त भी तो वैसा ही था न?"***

गांधी आगे लिखते है-

"मुझे कहना चाहिये कि मैं अपनी स्त्री के प्रति विषयासक्त था। शाला (विद्यालय) में भी उसके विचार आते रहते। कब रात हो और कब हम मिलें, यह विचार बना रहता। वियोग असह्य था।"

मोहनदास गांधी बचपन से ही कायर और अंधविश्वासी थे। अंधेरे में कहीं जाते हुए वह डरते थे। घर में भी भूत, प्रेत, चोर और सांप आदि से डरते थे। इसलिए रात के समय भी दीपक जला रखकर ही सोया करते थे। एक दिन उनके घर में काम करने वाली सेविका रंभा ने मोहनदास गांधी को इस प्रकार डरते हुए देखकर कहा- ***"राम का नाम ले। जो राम का नाम लेता हैं, उसका बाल भी बांका नहीं होता है। राम जिसके साथ है, उसे डर किस बात का?"*** मोहनदास गांधी के कमजोर मस्तिष्क में यह बात जम गयी। वह भूत- प्रेत आदि से बचने के लिए राम का नाम जपने लगे। वह बात अलग है कि सक्रीय राजनीति में आने के बाद गांधी ने राम के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न खड़ा कर दिया, भगवान राम को ही काल्पनिक बता दिया।

मोहनदास गांधी के माता-पिता तो शाकाहारी थे, लेकिन मोहनदास गांधी बचपन में ही कुसंगति के शिकार हो गये। वह घर वालों से छिपकर मांस खाने लगे और बीड़ी पीने लगे। मांसाहार और नशा करने के लिए रूपये की आवश्यकता होती थी, इसके लिए मोहनदास गांधी चोरी भी करने लगे। बाद में उनके बडे भाई ने जब उनको इंग्लैंड पढ़ने के लिए भेजने का निश्चय किया, उस समय उनकी माता पूतली बाई ने उनसे कहा- ***"तू मेरे सामने प्रतिज्ञा कर, मैं मांस नहीं खाउंगा, मदिरा नहीं पीउंगा और कुसंगति में पड़कर गलत मार्ग (भोग-विलास) नहीं अपनाउंगा।"*** गांधी ने यह तीनों प्रतिज्ञा की, इस प्रतिज्ञा के बाद ही उनको इंग्लैंड जाने

दिया गया। अपनी आत्मकथा में गांधी ने कहा है कि मैं इस बात से आश्वत हूँ कि मैं अपनी मांस व शराब संबंधी प्रतिज्ञा को पूरा कर पाया। परन्तु अपनी तीसरी प्रतिज्ञा- भोग-विलाश न करना के संबंध में चुप्पी साध गए। क्यों ? स्वयं गांधी ने उत्तर दिया, *"कुछ बातें ऐसी होती हैं जो पुरूष और उसके कर्ता के मध्य ही रहती हैं।"*

गाँधी जो अपने पुत्रो को अच्छे संस्कार नही दे सका वह कैसे राष्ट्रपिता हो सकता है. ? इसमे कांग्रेसियों की गहरी चाल रही है सत्ता पर कब्ज़ा किये रखने के लिए ।

मोहनदास गांधी के बड़े बेटे हरिलाल ने अपनी पुत्री मनु के साथ 11 साल की उम्र में इतनी क्रूरता के साथ बलात्कार किया था की वह बुरी तरह जख्मी हो गयी थी और इलाज करना पड़ा था. यह रहस्योद्घाटन खुद महात्मा गाँधी के पत्र से हुआ है जो उसने हरिलाल को लिखे थे. इस पत्र से यह भी पता चला है की हरिलाल एक नम्बर का अय्याश और शराबी था. बेटा बाप से भी दो कदम आगे निकल गया प्रतीत होता है.

गांधी जी के खत से बेटे की करतूत का खुलासा

लंदन, प्रेट्र : महात्मा गांधी बड़े बेटे हरिलाल के चाल-चलन को लेकर खासे आहत थे। उन्होंने हरि को तीन विस्फोटक पत्र लिखे। जिनकी नीलामी अगले सप्ताह इंग्लैंड में की जाएगी। इन पत्रों में गांधी ने बेटे के व्यवहार पर गहरी चिंता जताई थी।

नीलामीकर्ता 'मुलोक' को इन तीन पत्रों की नीलामी से 50 हजार पौंड (करीब 49 लाख रुपये) से 60 हजार पौंड (करीब 59 लाख रुपये) प्राप्त होने की उम्मीद है। ये पत्र राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने जून, 1935 में लिखे थे। हरिलाल के अनुचित व्यवहार पर गांधी जी ने पत्र में लिखा, 'तुम्हें यह जानना चाहिए कि मेरे लिए तुम्हारी समस्या हमारी राष्ट्रीय स्वतंत्रता से अधिक कठिन हो गई है।' पत्र में उन्होंने कहा, 'मनु ने मुझे तुम्हारे बारे में बहुत सी खतरनाक बातें बताई हैं। उसका कहना है कि तुमने आठ वर्ष पहले

◆ अपनी बेटी से दुष्कर्म करने पर हरिलाल से आहत थे बापू

◆ राष्ट्रपिता के तीन विस्फोटक पत्रों की नीलामी इसी सप्ताह

उसके साथ दुष्कर्म किया था। जख्म इतना ज्यादा था कि उसे इलाज कराना पड़ा।' गौरतलब है कि मनु गांधी जी पोती और हरिलाल की बेटी थीं।

मुलोक द्वारा जारी बयान में कहा गया है, 'ये पत्र गुजराती में लिखे गए और अच्छी हालत में हैं। जहां तक हमारी जानकारी है इन्हें सार्वजनिक रूप ने पहले कभी नहीं देखा गया। इनसे गांधी जी के बेटे के संबंध में परेशानी की नई जानकारी मिलती है।'

हरिलाल पिता की तरह बैरिस्टर बनने के लिए इंग्लैंड जाकर पढ़ाई करना चाहते थे। गांधी जी ने इससे मना कर दिया। उनका मानना था कि पश्चिमी शिक्षा ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष में मददगार साबित नहीं होगी। इसके बाद हरिलाल ने 1911 में परिवार से संबंध तोड़ लिया। फिर जीवनभर पिता से उनके संबंध खराब ही बने रहे। एक अन्य पत्र में गांधी जी ने कहा, 'मुझे बताओ कि क्या तुम अब भी अल्कोहल और विलासिता में रुचि रखते हो। मेरे विचार से अल्कोहल का सहारा लेने से ज्यादा अच्छा तो तुम्हारे लिए मर जाना है।'

गांधी के बड़े बेटे हरिलाल द्वारा अपनी बेटी का बलात्कार

गजब का सत्यवादी था मिस्टर मोहनदास गांधी !

जब गांधी के बेटे हरिलाल ने अपनी बेटी मनुबेन के साथ बर्बर बलात्कार किया तो मिस्टर मोहनदास गांधी जो कि वकील था ने अपने बेटे हरिलाल को बलात्कार की सजा दिलाना तो दूर उल्टा अपने प्रभाव का उपयोग करते हुए पूरे मामले को ही दबा दिया ?

गांधी के बड़े बेटे हरिलाल अपनी बेटी मनुबेन का बलात्कार 11 साल की उम्र में करता है, नाराज गांधी अपने बेटे को चिट्ठी लिख उसे डांटते हैं की उसने एक छोटी सी बच्ची के साथ इस कदर हैवानियत किया की उसे खून से लथपथ हॉस्पिटल लेकर जाना पड़ा। (प्रमाण के लिए इंडिया टुडे में छपा आर्टिकल पढ़ें)

मोहन दास गांधी के बड़े बेटे हरिलाल के चाल-चलन को लेकर खासे आहत थे। उन्होंने हरि को तीन विस्फोटक पत्र लिखे। जिनकी नीलामी अगले सप्ताह इंग्लैंड में की जाएगी। इन पत्रों में गांधी ने बेटे के व्यवहार पर गहरी चिंता जताई थी।

नीलामीकर्ता 'मुलोक' को इन तीन पत्रों की नीलामी से 50 हजार पौंड (करीब 49 लाख रुपये) से 60 हजार पौंड (करीब 59 लाख रुपये) प्राप्त होने की उम्मीद है। ये पत्र मोहन दास गांधी ने जून, 1935 में लिखे थे। हरिलाल के अनुचित व्यवहार पर हरिलाल द्वारा अनुचित व्यवहार करने के आरोपों के संबंध में एक पत्र में महात्मा गांधी लिखते हैं,

"तुमको पता होना चाहिए कि तुम्हारी समस्या मेरे लिए हमारे देश की स्वतंत्रता से भी अधिक मुश्किल हो गई है."

पत्र में गांधीजी ने कहा, *"मनु तुम्हारे बारे में कई खतरनाक चीजें कह रही है. वह कहती है कि तुमने आठ वर्ष पहले उससे बलात्कार किया था तथा उससे वह इस कदर आहत हुई थी कि उसे चिकित्सा उपचार कराना पड़ा था."*

गौरतलब है कि मनु गांधी की पोती और हरिलाल की बेटी थीं।

मुलोक द्वारा जारी बयान में कहा गया है, 'ये पत्र गुजराती में लिखे गए और अच्छी हालत में हैं। जहां तक हमारी जानकारी है इन्हें सार्वजनिक रूप ने पहले कभी नहीं देखा गया। इनसे गांधी के बेटे के संबंध में परेशानी की नई जानकारी मिलती है।'

हरिलाल पिता की तरह बैरिस्टर बनने के लिए इंग्लैंड जाकर पढ़ाई करना चाहते थे। गांधी ने इससे मना कर दिया। इसके बाद हरिलाल ने 1911 में परिवार से संबंध तोड़ लिया। फिर जीवनभर मोहन दास गांधी से उनके संबंध खराब ही बने रहे। एक अन्य पत्र में गांधी ने कहा, 'मुझे बताओ कि क्या तुम अब भी अल्कोहल और विलासिता में रुचि रखते हो। मेरे विचार से अल्कोहल का सहारा लेने से ज्यादा अच्छा तो तुम्हारे लिए मर जाना है।

इस घटना के ठीक 9 साल स्वयं गांधी उसी मनुबेन सहित आश्रम की अन्य जवान लड़कियों के साथ नंगे नहाते और साथ नंगे सोते हैं, जिसे वो "ब्रहमचर्य का प्रयोग" नाम देते हैं। तत्कालीन विनोवा भावे जैसे गाँधीवादी और पटेल साहब जैसे मणिसियों ने इसका पुरजोर बिरोध किया तो शर्मिंदा होकर गांधी ने इस कुकृत्य को बंद किया। (सन्दर्भ- दैनिक जागरण, दिनांक 14-05-2014)

सरदार पटेल का गांधी को उनके ब्रहमचर्य के प्रयोगों पर पत्र !!!

25 जनवरी, 1947 लड़कियों के साथ गांधी के ब्रहमचर्य के प्रयोगों पर सरदार पटेल के क्रोध की कोई सीमा नहीं थी. गांधी जब मरियम-हीरापुर में थे तब पटेल ने लिखा था, "किशोर लाल मशरूवाला, मथुरादास और राजकुमारी अमृत कौर के नाम आपके पत्र पढ़े. आपने हमें पीड़ा के अग्निकुंड में धकेल दिया है. मैं समझ नहीं सकता कि आपने यह प्रयोग दोबारा शुरू करने का विचार क्यों किया? पिछली बार आपसे बात करने के बाद हमें लगा था कि यह अध्याय खत्म हो चुका है. आपको हमारी भावनाओं की परवाह नहीं है. हम नितांत असहाय महसूस कर रहे हैं. देवदास की भावनाओं को गहरी ठेस पहुंची है. हम सब की पीड़ा की कोई सीमा नहीं है. अगली चर्चा तक आप यह सब रोक दें..."

16 फरवरी, 1947 पटेल के पत्र से पहले गांधी ने नवजीवन प्रकाशन के जीवन देसाई को पत्र लिखकर कहा था कि वे उनके ब्रहमचर्य के प्रयोगों का विवरण हरिजन सहित नवजीवन के प्रकाशनों में छापें. पटेल ने लिखा: "...इनके प्रचार से दुनिया को कोई लाभ नहीं होगा. आप कहते हैं कि दूसरों को आपके ब्रहमचर्य के

प्रयोगों का अनुकरण नहीं करना चाहिए. आपके इस कथन का कोई अर्थ नहीं. लोग बड़ों के दिखाए रास्ते पर चलते हैं. न जाने क्यों आप लोगों को धर्म की बजाए अधर्म के रास्ते पर धकेलने पर तुले हैं...लाचारी की इस हालत में नवजीवन के ट्रस्टी इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि चाहे जो हो जाए, वे इस प्रयोग के बारे में कुछ नहीं छाप सकते."

महाकवि निराला जी और मिस्टर गांधी

1936 ईश्वीं की बात है । लखनऊ में कांग्रेस पार्टी का अधिवेशन हो रहा था । मिस्टर गांधी, नेहरू तथा कांग्रेस के बहुत से बड़े नेता वहा उपस्थित थे । निराला जी भी उसमें उपस्थित थे । मिस्टर मोहनदास गांधी के भाषण का एक वाक्य कांटे की तरह उनके ह्रदय में गढ़ गया था कि ' हिन्दी जगत में कोई रविन्द्र जैसा नहीं हुआ । ' वाक्य याद आता और खून खौलने लगता । वह निडर भाव से मोहनदास गांधी के पास चले गये । अभिवादन करके छूटते ही प्रश्न पूछा -

' हिन्दी में कोई रविन्द्र जैसा नहीं हुआ, आपने कहा था । '

' कहा तो था ' मोहनदास गांधी उनका मुँह देखने लगा । निराला जी के व्यक्तित्व की छाप उस पर पड़ी ।

' अब भी आपका यही विचार है ! ' निराला जी ने प्रश्न किया ।

' हाँ, हाँ ' मोहनदास गांधी बोला - ' पर आप चाहते क्या हैं ? '

मैं जानना चाहता हूँ कि आपने हिन्दी काव्य कितना पढ़ा है । निराला जी औजस्वी वाणी में बोले ।

कुछ विशेष तो नहीं पढ़ा । मोहनदास गांधी ने डरते हुए उत्तर दिया ।

' फिर...... ? ' निराला कुछ रूक कर बोले । आपने जय शंकर प्रसाद को पढ़ा है । सुमित्रा नन्दन पंत को पढ़ा है और सूर्यकान्त निराला को पढ़ा है । मोहनदास गांधी केवल निराला जी का मुँह ताकता रहा, कुछ बोल न पाया ।

फिर आपने कैसे सोच लिये - किये कह दिया कि हिन्दी में कोई रविन्द्र जैसा नहीं हुआ ? क्यों कह दिया ? मैं सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला आपसे पूछता हूँ कि बिना पढ़े कुछ कहने का अधिकार आपको किस ने दिया ।

' मुझे क्षमा करो भाई ' मिस्टर मोहनदास भयभीत होकर निराला जी से क्षमा मांगने लगा । **मिस्टर गांधी, कवि रविन्द्र नाथ टैगोर की भांजी से प्रेम करता था और चाटुकारितावश उसने रविन्द्र की प्रशंसा की थी, पर इस अधिवेशन में महाकवि निराला के सामने उसे अपना सम्मान बचाना भारी पड़ गया ।**

' क्षमा ' महाकवि निराला जी पिघल गये और मिस्टर मोहनदास गांधी को क्षमा दान कर वहां से चले आये । मिस्टर गांधी की गर्दन नीचे तथा महाकवि निराला का मस्तिष्क ऊँचा था ।

गांधी जी को राष्ट्रपिता की उपाधि सर्वप्रथम कवि रविन्द्र नाथ टैगोर ने दी थी ,

गांधी ने टैगोर साहब को "गुरुदेव" की उपाधि दी और टैगोर साहब ने इन्हे "राष्ट्रपिता" कहकर सम्बोधित किया। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने तो केवल उसकी पुनर्नावृत्ति की थी । द इंडियन स्टेगल 1920 टू 1942 पुस्तक में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने मोहनदास गांधी को तानाशाह व क्रुर बताया है ।

मोहनदास गांधी और हिन्दी भाषा

मोहनदास करमचंद गांधी ने अपने अफ्रीका प्रवास के दौरान देखा और समझा कि भारत से अनेक लोग जो अफ्रीका में रोजगार के लिए आए है वे तमिल, तेलगू, गुजराती, मराठी आदि भाषा बोलने वाले है तथा हिन्दी भाषी अल्पसंख्या में है, तो भी वे सब आपस में एक दूसरे से हिन्दी में ही बात करते है, अतः भारत में विभिन्न भाषा-भाषियों के बीच कोई संपर्क भाषा हो सकती है तो वह केवल हिन्दी है। गांधी स्वयं भी हिन्दी नहीं जानते थे, फिर भी उन्होंने हिन्दी के महत्व को पहचाना और राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकारा था।

गांधी का हिन्दी हितेषी का यह प्रबल स्वरूप खिलापत असहयोग आन्दोलन (अरबपंथी कट्टर मुसलमानों द्वारा तुर्की के खलीफा के समर्थन में चलाया गया एक विशुद्ध साम्प्रदायिक आन्दोलन, जिसका भारत या भारत के मुसलमानों से कोई संबंध नहीं था।) को 20अगस्त1920 में अपना नेतृत्व प्रदान करने से पूर्व तक बना रहा। जब गांधी ने देखा कि मुस्लिम हिन्दी को पसंद नहीं करते तो उनका उत्साह हिन्दी के प्रति धीरे-धीरे ठंडा पड़ने लगा और वह हिन्दी के साथ उर्दू का भी प्रयोग करने लगे। वह सांप्रदायिक तुष्टिकरण हेतु हिन्दी के स्थान पर हिन्दुस्तानी (फारसी लिपि में लिखे जाने वाली उर्दू) भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने की बात करने लगे। भगवान श्रीराम को शहजादा राम, महाराजा दशरथ को बादशाह दशरथ, माता सीता को बेगम सीता और महर्षि वाल्मीकि को मौलाना वाल्मीकि संबोधित कराया जाने लगा।

गांधी हिन्दी साहित्य सम्मेलन के लगातार 27 वर्षो तक अध्यक्ष रहे। अतः वे समझते थे कि वे जो चाहेंगे और कहेंगे, उसे हिन्दी साहित्य सम्मेलन आँख बंद करके मानेगा किंतु ऐसा नहीं हुआ। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से कार्यरत था। गांधी ने चाहा कि भविष्य में हिन्दी के स्थान पर हिन्दुस्तानी भाषा का प्रचार करें जो देवनागरी के साथ फारसी लिपि (जिसमें उर्दू लिखी जाती है।) का भी प्रचार हो किंतु हिन्दी साहित्य सम्मेलन फारसी लिपि के प्रचार के लिए सहमत नहीं हुआ तो गांधी जी को बहुत निराशा हुई। उन्होंने 25 मई 1945 को हिन्दी के शलाका पुरूष राजर्षि पुरूषोत्तम दास टंडन को पत्र लिखा, *'सम्मेलन की दृष्टि से हिन्दी राष्ट्रभाषा हो सकती है, जिसमें नागरी लिपि को ही राष्ट्रीय स्थान दिया जाता है। जब मैं सम्मेलन की भाषा हिन्दी और नागरी लिपि को पूरा राष्ट्रीय स्थान नहीं देता हूँ, तब मुझे सम्मेलन से हट जाना चाहिए। ऐसी दलील मुझे योग्य लगती है। इस हालत में क्या सम्मेलन से हट जाना मेरा फर्ज नहीं होता है क्या?'*

इस पत्र में गांधी ने पुरूषोत्तम दास टंडन पर मनोवैज्ञानिक दबाब डालते हुए परामर्श चाहा था कि क्या उनको सम्मेलन से त्यागपत्र दे देना चाहिए? किंतु टंडन जी ने निर्भिकतापूर्वक अपने 8 जून 1945 के उत्तर में गांधी को सम्मेलन से त्यागपत्र देने के लिए लिख दिया, *'आपकी आत्मा कहती है कि सम्मेलन से अलग हो जाऊँ, तो आपके अलग होने की बात पर बहुत खेद होने पर भी नतमस्तक हो आपके निर्णय को स्वीकार करूंगा।'* अंततः जी ने 25 जुलाई 1945 को पत्र के माध्यम से अपना त्यागपत्र भेज दिया।

पाकिस्तान ने उर्दू को वहाँ की राष्ट्रभाषा घोषित कर दिया । लेकिन भारत में उर्दू को राष्ट्रभाषा बनाना संभव नहीं था । तो गांधी वध के पश्चात उर्दू के सभी समर्थकों ने गांधी का नाम ले लेकर उर्दू को हिन्दुस्तानी के नाम से भारत की राष्ट्रभाषा बनवाने हेतु संविधान सभा में हिन्दुस्तानी की जोरदार पैरवी की थी । लेकिन देशभक्तों के प्रबल विरोध के कारण गांधी की हिन्दुस्तानी भाषा पत्ते की तरह बिखर गई |

भारतीय इतिहास में खिलाफत असहयोग आन्दोलन

भारतीय इतिहास में खिलाफत असहयोग आन्दोलन का वर्णन तो है किन्तु कही विस्तार से नहीं बताया गया कि खिलाफत असहयोग आन्दोलन वस्तुत:भारत की स्वाधीनता के लिए नहीं अपितु वह एक राष्ट्र विरोधी व हिन्दू विरोधी आन्दोलन था।

खिलाफत आन्दोलन दूर देश तुर्की के खलीफा को गद्दी से हटाने के विरोध में भारतीय मुसलमानों द्वारा चलाया गया आन्दोलन था। असहयोग आन्दोलन भी खिलाफत आन्दोलन की सफलता के लिए चलाया गया आन्दोलन था। आज भी अधिकांश भारतीयों को यही पता है कि असहयोग आन्दोलन स्वतंत्रता प्राप्ति को चलाया गया कोंग्रेस का प्रथम आन्दोलन था। किन्तु सत्य तो यही है कि इस आन्दोलन का कोई भी राष्ट्रीय लक्ष्य नहीं था।

प्रथम विश्व युद्ध में तुर्की की हार के पश्चात अंग्रेजों ने वहां के खलीफा को गद्दी से पदच्युत कर दियाथा। खिलाफत+असहयोग आंदोलनों का लक्ष्य तुर्की के सुलतान की गद्दी वापस दिलाने के लिए चलाया गया आन्दोलन था।

यहाँ एक हास्यप्रद बात और है कि तुर्की की जनता ने स्वयं ही कमाल अता तुर्क के नेतृत्व में तुर्की के खलीफा को देश निकला दे दिया था।

भारत में मोहम्मद अली जोहर व शोकत अली जोहर नाम के दो कट्टर साम्प्रदायिक भाई खिलाफत का नेतृत्व कर रहे थे। गाँधी ने खिलाफत के सहयोग के लिए ही असहयोग आन्दोलन की घोषणा कर डाली। जब श्री विपिन चन्द्र पाल, डा. एनी बेसेंट, सी. ऍफ़ अन्द्रूज आदि नेताओं ने कांग्रेस की बैठक मैं खिलाफत के समर्थन का विरोध किया तो गाँधी ने यहाँ तक कह डाला, *"जो खिलाफत का विरोधी है तो वह कांग्रेस का भी शत्रु है।"*

गाँधी जी खिलाफत आन्दोलन के खलीफा ही बन गए | मुसलमानों व कांग्रेस ने जगह जगह प्रदर्शन किये | 'अल्लाह हो अकबर' जैसे नारे लगाकर मुस्लिमो की भावनाएं भड़काई गयी| महामना मदनमोहन मालवीय जी तहत कुछ एनी नेताओं ने चेतावनी दी की खिलाफत आन्दोलन की आड़ मैं मुस्लिम भावनाएं भड़काकर भविष्य के लिए खतरा पैदा किया जा रहा है किन्तु गांधीजी ने कहा *' मैं मुसलमान भाईओं के इस आन्दोलन को स्वराज से भी ज्यादा महत्वा देता हूँ '* भले ही भारतीय मुसलमान खिलाफत आन्दोलन करने के वावजूद अंगेजों का बाल बांका नहीं कर पाए किन्तु उन्होंने पुरे भारत मैं मृतप्राय मुस्लिम कट्टरपंथ को जहरीले सर्प की तरह जिन्दा कर डाला |

इतिहास साक्षी है कि जिस समय खिलाफत आन्दोलन फेल हो गया ,तो मुसलमानों ने इसका सारा गुस्सा हिदू जनता पर निकला,मुसलमान जहाँ कहीं भी संख्या में अधिक थे ,हिन्दू समाज पर हमला करने लगे. हजारों हिदू ओरतों से बलात्कार हुए,लाखों की संख्या में तलवार के बल पर मुसलमान बना दिए गए. सबसे भयंकर स्थिति केरल में मालाबार में हुए जो इतिहास में मोपला कांड के नाम से जानी जाती है. मोपला कांड में ही अकेले 20 हजार हिन्दुओं को काट डाला गया ,20 हजार से ज्यादा को मुस्लमान बना डाला. 10 हजार से अधिक हिदू ओरतों के बलात्कार हुए . और यह सब हुआ गाँधी के असहयोग आन्दोलन के कारण.

इस प्रकार कहा जा सकता है कि 1920 तक तिलक की जिस कोंग्रेस का लक्ष्य स्वराज्य प्राप्ति था गाँधी ने अचानक उसे बदलकर एक दूर देश तुर्की के खलीफा के सहयोग और मुस्लिम आन्दोलन में बदल डाला, जिसे वहांके जनता ने भी लात मरकर देश निकला दे दिया।

दूर देश में मुस्लिम राज्य की स्थापना के लिए स्वराज्य की मांग को कोंग्रेस द्वारा ठुकराना इस आन्दोलन को चलाना किस प्रकार राष्ट्रवादी था या कितना राष्ट्रविरोधी भारतीय इतिहास में इससत्य का लिखा जाना अत्यंत आवश्यक है अन्यथा भारतीय आजादी का दंभ भरने वाली कोंग्रेस लगातार भारत को ऐसे ही झूठ भरे इतिहास के साथ गहन अन्धकार की और रहेगी.

स्वामी श्रद्धानंद जी, राजपाल जी आदि की हत्या में गांधी की भूमिका संदिग्ध

महात्मा की उपाधि गाँधी को देने वाले स्वामी श्रद्धानन्द अपने शुद्धिकरण अभियान में एक युवती (अभिनेत्री तबस्सुम की माँ) द्वारा शुद्धिकरण के आग्रह पर उसकी शुद्धि करते हैं और प्रतिक्रिया के उबाल से त्रस्त हो गाँधी स्वामीजी के अभियान के विरोध में बयान देते हैं और फिर एक मतांध मुसलमान आतंकवादी अब्दुल रसीद द्वारा 23 दिसंबर 1923 को स्वामी श्रध्द्धानंद सरस्वती जी की हत्या कर दी गयी, लेकिन गांधी ने इस जघन्य हत्याकांड की निंदा करना तो दूर , हत्यारे को प्यारे रसीद कहकर संबोधित किया। पुलिस केस से बचाने की भावना से गाँधीजी उस हत्यारे को 'मेरा भाई कहते हैं और उसे निर्दोष कह कर माफ करने की सार्वजनिक अपील निकालते/करते हैं। इतना ही नही जब अंग्रेज़ सरकार ने अब्दुल रसीद को फासी की सजा सुनाई तो गांधी ने तत्काल रसीद के लिए सरकार से क्षमा और दया की भीख मांगी , जिसे अंग्रेज़ सरकार ने अस्वीकार कर दिया।

गाँधी जी ने यंग इंडिया में लिखा , *" मैं मियां अब्दुल रशीद नामक मुसलमान, जिसने श्रधानंद जी की हत्या की है , का पक्ष लेकर कहना चाहता हूँ , की इस हत्या का दोष हमारा है | अब्दुल रशीद जिस धर्मोन्माद से पीड़ित था, उसका उत्तरदायित्व हम लोगों पर है | द्वेषाग्नि भड़काने के लिए केवल मुसलमान ही नहीं, हिन्दू भी दोषी हैं | "*

अंग्रेजों को मुसीबत में देखकर गांधी आंदोलन बंद कर देते थे। मुस्लिमों द्वारा हिन्दुओं पर किये गये अत्याचारों व धर्मांतरण के विरूद्ध भी कभी नहीं बोला। यही नहीं, जब उनका बेटा हरिलाल इस्लाम ग्रहण कर अब्दुल्ला बन गया, तो भी उन्हें कोई आश्चर्य या दु:ख नहीं हुआ, पर आर्य समाज के शुद्धि आंदोलन शुरू करते ही वे उसका खुलकर विरोध करने लगे ? स्वामी दयानन्द को संकुचित विचार वाला और सत्यार्थ प्रकाश को निराशाजनक पुस्तक कहते हैं। महर्षि दयानन्द की आलोचना में मुसलमानों द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'उन्नीसवीं सदी का महर्षि' के विरूद्ध एक शब्द भी नहीं बोलते और इसके उत्तर में प्रकाशित पुस्तक 'रंगीला रसूल' की जी भर निन्दा करते है, तथा लेख लिखकर मुस्लिमों को भड़काते हैं।

1920 में 'कृष्ण तेरी गीता जलानी पड़ेगी और 'बीसवीं सदी का महर्षि नाम से कृष्ण और महर्षि दयानन्द पर कीचड़ पोतने के लिए लिखी गई दो पुस्तकों के उत्तर में लिखी गई पुस्तक 'रंगीला रसूल(लेखक पंडित चमूपति) को छापने के अपराध में एक व्यक्ति- प्रकाशक राजपाल पर हमला कर देता है, जिसमें राजपाल (राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन के संस्थापक) बच जाते हैं और वह हत्यारा फिर उन पर हमला करने के लिए गलती से किसी और पर हमला कर देता है। तब भी पुलिस केस से बचाने की भावना से गाँधी जी बयान देते हैं- **'एक साधारण तुच्छ पुस्तक-विक्रेता ने कुछ पैसे बनाने के लिए इस्लाम के पैगम्बर की निन्दा की है, इसका प्रतिकार होना चाहिये।** ' ख़िलाफ़त आन्दोलन वाले मौलाना मोहम्मद अली जो गांधी का घनिष्ठ मित्र था, ने जामा मस्जिद से तक़रीर की कि काफ़िर राजपाल को छोड़ना नहीं, उसे सज़ा देनी चाहिये। अन्तत: महाशय राजपाल की हत्या कर दी गई।

ऐसे कम से कम पचास किस्से और हैं, जिनमें आर्यसमाज के सन्यासियों, प्रचारकों, विद्वानों आदि की हत्या कर दी गई और इसके बरक्स **गाँधी ने सदा उन हत्यारों का ही साथ दिया, जिन्होंने गाँधी के काल में आर्यसमाज के विद्वानों, प्रचारकों और सन्यासियों पर हमले किए, हत्याएँ कीं।**

डॉ. कविता वाचक्नवी (लन्दन में भारतीय उच्चायोग द्वारा हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ अवदान हेतु 'हरिवंश राय **बच्चन लेखन सम्मान एवं पु**रस्कार (2014) व 'आचार्य **महावीर प्रसाद पत्रकारिता सम्मान** -2012 से अलंकृता) **ब्रिटेन** में पिछली पीढ़ी के कुछ इतिहासकारों से मिली तो उन्होंने कहा कि ***गाँधी क्योंकि भारतीयों के सबसे कमजोर प्रतिनिधि थे जिनके माध्यम से भारतीय नेताओं और जनता पर मनमानी चलाई जा सकती थी और समझौतों के लिए बाध्य किया जा सकता था, इसलिए अंग्रेजों ने जानबूझ कर गाँधी का इस्तेमाल अपने लाभ के लिए करने के प्रयोजन से गाँधी को प्रमुखता दी और उन्हें भारतीयों के प्रतिनिधि के रूप में वरीयता दी। अन्यथा उन्हें गर्मदल के किसी वीर को प्रतिनिधि स्वीकारना पड़ता तो अंग्रेज अपनी मंशाओं और मंसूबों में कभी कामयाब न होते और न भारत का विभाजन कर पाते। गाँधी उनके लिए एक कमजोर चरित्र का मोहरा थे, जिसके माध्यम से जनता और नेताओं पर भावनात्मक दबाव बनाया जाता रहा और गाँधी अंग्रेजों के कट्टर दुश्मन भी नहीं थे।***

जिन्होंने घृणा के उद्देश्य से स्वामी श्रद्धानन्द जी सहित बीसियों पूज्यों की हत्या की, उनका तो उद्देश्य भी गलत था और कार्य भी, किन्तु गाँधी ने स्वयं दूषित उद्देश्य, हिंसा व गलत कार्य करने वालों को सिर पर बिठाया और उन्हें माफ करने की अपीलें कीं। स्वामी श्रद्धानन्द जी, राजपाल जी आदि की हत्या तक में भी गाँधी संदिग्ध ठहरते हैं। ऐसे में गाँधीभक्तों को अपने स्वार्थों व राजनीति पर पुनर्विचार करना होगा और देशहित की भावना भावना से सोचना होगा।

स्वातंत्रवीर सावरकर जी ने उन्हीं दिनों 20 जनवरी 1927 के 'श्रधानंद' के अंक मैं अपने लेख में गाँधी द्वारा हत्यारे अब्दुल रशीद की तरफदारी की कड़ी आलोचना करते हुए लिखा - ***गाँधी जी ने अपने को सुधा हर्दय , 'महात्मा' तथा निस्पछ सिद्ध करने के लिए एक मजहवी उन्मादी हत्यारे के प्रति सुहानुभूति व्यक्त की है | मालाबार के मोपला हत्यारों के प्रति वे पहले ही ऐसी सुहानुभूति दिखा चुके हैं | गाँधी जी ने स्वयं 'हरिजन' तथा अन्य पत्रों मैं लेख लिखकर स्वामी श्रधानंद जी तथा आर्य समाज के 'शुधि आन्दोलन " की कड़ी निंदा की | दूसरी ओर जगह जगह हिन्दुओं के बलात धरमांतरण के विरुद्ध उन्होंने एक भी शब्द कहने का साहस नहीं दिखाया|***

ब्रिटेन भारत को क्यों छोड़ रहा है?

ब्रिटिश संसद में जब विपक्षी सदस्य प्रश्न पूछते हैं कि ब्रिटेन भारत को क्यों छोड़ रहा है, तब प्रधानमंत्री एटली का उत्तर दो बिन्दुओं में आता है कि आखिर क्यों ब्रिटेन भारत को छोड़ रहा है-

1. भारतीय मर्सिनरी (पैसों के बदले काम करने वाली- पेशेवर) सेना ब्रिटिश राजमुकुट के प्रति वफादार नहीं रही, और

2. इंग्लैण्ड इस स्थिति में नहीं है कि वह अपनी (खुद की) सेना को इतने बड़े पैमाने पर संगठित एवं सुसज्जित कर सके कि वह भारत पर नियंत्रण रख सके।

इंडियन नेवी का मुक्ति संग्राम और भारत की स्वतंत्रता

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस व आजाद हिन्द फौज द्वार भारत की स्वतंत्रता के लिए शुरू किये गये सशस्त्र संघर्ष से प्रेरित होकर रॉयल इंडियन नेवी के भारतीय सैनिकों ने 18 फरवरी 1946 को एचआईएमएस तलवार नाम के जहाज से मुम्बई में अंग्रेजी सरकार के विरूद्ध मुक्ति संग्राम का उद्घोष कर दिया था। उनके क्रान्तिकारी मुक्ति संग्राम ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा प्रदान की।

नौसैनिकों का यह मुक्ति संग्राम इतना तीव्र था कि शीघ्र ही यह मुम्बई से चेन्नई , कोलकात्ता , रंगून और कराँची तक फैल गया। महानगर , नगर और गाँवों में अंग्रेज अधिकारियों पर आक्रमण किये जाने लगे तथा कुछ अंग्रेज अधिकारियों को मार दिया गया। उनके घरों पर धावा बोला गया तथा धर्मान्तरण व राष्ट्रीय एकता विखण्डित करने के केन्द्र बने उनके पूजा स्थलों को नष्ट किये जाने लगा। स्थान - स्थान पर मुक्ति सैनिकों की अंग्रेज सैनिकों के साथ मुठभेड होने लगी। ऐसे समय में भारतीय नेताओं ने मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए लड रहे उन वीर सैनिकों का कोई साथ नहीं दिया , जबकि देश की आम जनता ने उन सैनिकों को पूरा सहयोग दिया। क्रान्तिकारी नौसैनिकों के नेतृत्वकर्ता ' श्री बी. सी. दत्त ' ने खेद प्रकट किया कि उनकों प्रोत्साहन और समर्थन देने के लिए कोई राष्ट्रीय नेता उनके पास नहीं आया , ***राष्ट्रीय नेता केवल अंग्रेजों के साथ लम्बी वार्ता करने में तथा सत्रों व बैठकों के आयोजन में विश्वास रखते है। उनसे क्रान्तिकारी कार्यवाही की कोई भी आशा नहीं की जा सकती।***

नौसैनिकों के मुक्ति संग्राम की मौहम्मद अली जिन्ना ने निन्दा की थी व जवाहरलाल नेहरू ने अपने को नौसैनिक मुक्ति संग्राम से अलग कर लिया था। मोहनदास गांधी जो उस समय पुणे में थे तथा जिन्हें इंडियन नेवी के मुक्ति संग्राम से हिंसा की गंध आती थी , उन्होंने नेवी के सैनिकों के समर्थन में एक शब्द भी नहीं बोला , अपितु इसके विपरीत उन्होंने वक्तव्य दे डाला कि -

" यदि नेवी के सैनिक असन्तुष्ठ थे तो वे त्यागपत्र दे सकते थे । "
क्या अपने देश की स्वतंत्रता के लिए उनका मुक्ति संग्राम करना बुरा था ? जो लोग देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों पर खेलते थे , जो लोग कोल्हू में बैल की तरह जोते गये , नंगी पीठ पर कोडे खाए , भारत माता की जय का उद्घोष करते हुए फाँसी के फंदे पर झुल गये क्या इसमें उनका अपना कोई निजी स्वार्थ था ?

इंडियन नेवी के क्षुब्ध सैनिकों ने राष्ट्रीय नेताओं के प्रति अपना क्रोध प्रकट करते हुए कहा कि - " ***हमने रॉयल इंडियन नेवी को राष्ट्रीय नेवी में परिवर्तित पर दिया है , किन्तु हमारे राष्ट्रीय नेता इसे स्वीकार करने को तैयार नही है । इसलिए हम स्वयं को कुण्ठित और अपमानित अनुभव कर रहे है । हमारे राष्ट्रीय नेताओं की नकारात्मक प्रतिक्रिया ने हमको अंग्रेज नेवी अधिकारियों से अधिक धक्का पहुँचाया है।***"

भारतीय राष्ट्रीय नेताओं के विश्वासघात के कारण नौसैनिको का मुक्ति संग्राम हालाँकि कुचल दिया गया , लेकिन इसने ब्रिटिस सामाज्य की जडे हिला दी और अंग्रेजों के दिलों को भय से भर दिया। अंग्रेजों को ज्ञात हो गया कि केवल गोरे सैनिको के भरोसे भारत पर राज नहीं किया किया जा सकता , भारतीय सैनिक कभी भी क्रान्ति का शंखनाद कर 1857 का स्वतंत्रता समर दोहरा सकते है और इस बार सशस्त्र क्रान्ति हुई तो उनमें से एक भी जिन्दा नहीं बचेगा , अतः अब भारत को छोडकर वापिस जाने में ही उनकी भलाई है।

तत्कालीन ब्रिटिस हाई कमिश्नर जॉन फ्रोमैन का मत था कि 1946 में रॉयल इंडियन नेवी के विद्रोह (मुक्ति संग्राम) के पश्चात भारत की स्वतंत्रता सुनिश्चित हो गई थी । 1947 में ब्रिटिस प्रधानमंत्री लार्ड एटली ने भारत की स्वतंत्रता विधेयक पर चर्चा के दौरान टोरी दल के आलोचकों को उत्तर देते हुए हाउस ऑफ कॉमन्स में कहा था कि - " ***हमने भारत को इसलिए छोडा , क्योंकि हम भारत में ज्वालामुखी के मुहाने पर बैठे थे।*** " (दि महात्मा एण्ड नेता जी , पृष्ठ - 125 , लेखक - प्रोफेसर समर गुहा)

लालकिले में कोर्ट मार्शल के बहाने आजाद हिन्द फौज में शामिल सेना के भारतीय जवानों को बगावत के बदले 'सबक' सिखाने का दाँव ब्रिटिश सेना को उल्टा पड़ जाता है। भारतीय जवानों के बीच ब्रिटिश अधिकारियों का रुतबा (आजाद हिन्द सैनिकों की इस रिहाई के बाद) समाप्त हो जाता है। ...अब इस सेना के भरोसे भारत-जैसे विशाल देश पर शासन करना अँग्रेजों के लिए सम्भव नहीं है।

इन परिस्थितियों में लन्दन में भारत पर कुछ फैसले लिये जाते हैं, जिनमें से एक है- बर्मा के गवर्नर जेनरल लॉर्ड माउण्टबेटन को भारत का अन्तिम वायसराय बनाना (वावेल के स्थान पर)। माउण्टबेटन काँग्रेस अध्यक्ष नेहरू को 'भावी प्रधानमंत्री' के रूप में सिंगापुर बुलाते हैं और सूचित करते हैं कि नेहरू को ब्रिटेन की कुछ शर्तों का पालन करना होगा। उन शर्तों में से एक शर्त यह भी है कि आजाद हिन्द सैनिकों को आजाद भारत की सेना में शामिल नहीं किया जायेगा। (अगर नेताजी कहीं लौट आते हैं, तो ये सैनिक और इनके प्रभाव से अन्य सैनिक, भारत की सत्ता नेताजी के हाथों में सौंप देंगे!) इसके अलावे माउण्टबेटन नेहरू को आगाह करते हैं कि (लालकिले के कोर्ट-मार्शल में जो हुआ, सो हुआ) अब वे आजाद हिन्द फौज तथा नेताजी का गुणगाण न करें। बेशक, नेहरू को सारी शर्तें और सलाह मंजूर है।

हालाँकि बाद में इन सैनिकों को होमगार्ड, पुलिस, अर्द्धसैन्य बल में शामिल होने की छूट दी जाती है। मगर ज्यादातर गरीबी का जीवन बिताते हुए किसी प्रकार गुजर-बसर करते हैं। हाँ, मो. जिन्ना पाकिस्तान गये आजाद हिन्द सैनिकों को पूरे सम्मान के साथ नियमित पाकिस्तानी सेना में शामिल करते हैं।

यही लॉर्ड एटली 1956 में जब भारत यात्रा पर आते हैं, तब वे पश्चिम बंगाल के राज्यपाल निवास में दो दिनों के लिए ठहरते हैं। कोलकाता उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश चीफ जस्टिस पी.बी. चक्रवर्ती कार्यवाहक राज्यपाल हैं। वे लिखते हैं: "*... उनसे मेरी उन वास्तविक विन्दुओं पर लम्बी बातचीत होती है, जिनके चलते अँग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा। मेरा उनसे सीधा प्रश्न था कि गाँधीजी का "भारत छोड़ो" आन्दोलन कुछ समय पहले ही दबा दिया गया था और 1947 में ऐसी कोई मजबूर करने वाली स्थिति पैदा नहीं हुई थी, जो अँग्रेजों को जल्दीबाजी में भारत छोड़ने को विवश करे, फिर उन्हें क्यों (भारत) छोड़ना पड़ा? उत्तर में एटली कई कारण गिनाते हैं, जिनमें प्रमुख है नेताजी की सैन्य गतिविधियों के परिणामस्वरुप भारतीय थलसेना एवं जलसेना के सैनिकों में आया ब्रिटिश राजमुकुट के प्रति राजभक्ति में क्षरण। वार्तालाप के अन्त में मैंने एटली से पूछा कि अँग्रेजों के भारत छोड़ने के निर्णय के पीछे गाँधीजी का कहाँ*

तक प्रभाव रहा? यह प्रश्न सुनकर एटली के होंठ हिकारत भरी मुस्कान से संकुचित हो गये जब वे धीरे से इन शब्दों को चबाते हुए बोले, "न्यू-न-त-म / M i ni mu u m "

(श्री चक्रवर्ती ने इस बातचीत का जिक्र उस पत्र में किया है, जो उन्होंने आर.सी. मजूमदार की पुस्तक 'हिस्ट्री ऑव बेंगाल' के प्रकाशक को लिखा था।)

निष्कर्ष के रुप में यह कहा जा सकता है कि:-

1. अँग्रेजों के भारत छोड़ने के हालाँकि कई कारण थे, मगर प्रमुख कारण यह था कि भारतीय थलसेना एवं जलसेना के सैनिकों के मन में ब्रिटिश राजमुकुट के प्रति राजभक्ति में कमी आ गयी थी और बिना राजभक्त भारतीय सैनिकों के सिर्फ अँग्रेज सैनिकों के बल पर सारे भारत को नियंत्रित करना ब्रिटेन के लिए सम्भव नहीं था।

2. सैनिकों के मन में राजभक्ति में जो कमी आयी थी, उसके कारण थे- नेताजी का सैन्य अभियान, लालकिले में चला आजाद हिन्द सैनिकों पर मुकदमा और इन सैनिकों के प्रति भारतीय जनता की सहानुभूति।

3. अँग्रेजों के भारत छोड़कर जाने के पीछे गाँधीजी या काँग्रेस की अहिंसात्मक नीतियों का योगदान बहुत ही कम रहा।

उसी नेवी की बगावत के सिपाहियों को गाँधी ने 'सिपाही नहीं गुण्डे' कहा था और अँग्रेजों ने उस विद्रोह को बेरहमी से कुचलने में कामयाबी पाई थी. जिस पर बगावती सिपाहियों को गोलियों से भून दिए जाने पर प्रसिद्ध इन्क्लाबी शायर 'साहिर लुधियानवी' ने लिखा था ....

ए रहबर मुल्को कौम बता, ये किसका लहू है कौन मरा
क्या कौमो वतन की जय गाकर मरते हुए राही गुण्डे थे..
जो बागे गुलामी सह न सके वो मुजरिम-ए-शाही गुण्डे थे
जो देश का परचम ले के उठे वो शोख सिपाही गुण्डे थे
जम्हूर से अब नज़रें न चुरा अय रहबर मुल्को कौम बता
ये किसका लहू है कौन मरा ....
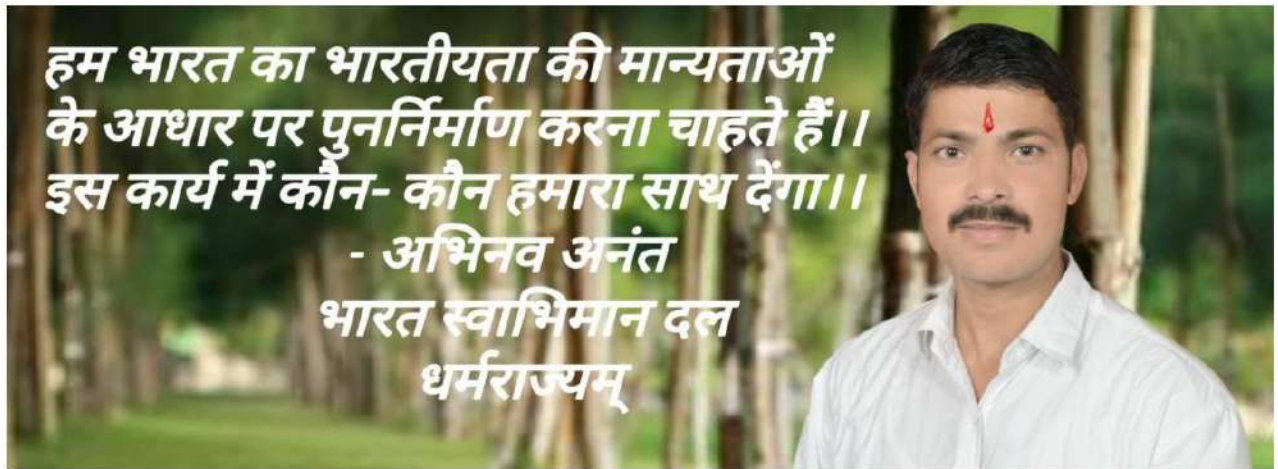
पैसा कमाया सिंध में सिंधीयों ने, 1947 में जब धर्म सुरक्षित न रहा तो सब छोड़कर भागना पड़ा सिंध से...

पैसा कमाया कश्मीर में पंडितों ने, बाद में केसर के खेत छोड़ कर भागना पड़ा कश्मीर से...

जूट व्यापारियों ने खूब पैसा बनाया बंगाल में, बाद में मालूम पड़ा की बंगाल तो उधर रह गया ये तो पूर्वी पाकिस्तान (1971 से बांग्लादेश) है तो भागना पड़ा बांग्लादेश से...

पैसा कमाओ अच्छी बात है लेकिन धर्म सुरक्षा में भी लगाओ... वरना सारा कमाया छोड़ भागने को तैयार रहो...

धन से धर्म की रक्षा होती हैं। धन के बिना कोई भी संगठन धर्म की रक्षा नहीं कर सकता। अतः धर्म रक्षा के लिए भी तन- मन के साथ धन का सहयोग भी करना चाहिए।

अंधकार को क्यों
धिक्कारें अच्छा हो
एक दीप जलाये
वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था को
केवल धिक्कारा जाय या देश
को विकल्प दिया जाये ?
फैसला आप करे !!
BSD
संपर्क करें 8535004500
भूख, भय, अभाव व भ्रष्टाचार से मुक्त स्वस्थ, समृद्ध, शक्तिशाली
एवं संस्कारवान भारत का पुनर्निर्माण
भारत स्वाभिमान दल
परिवर्तन जब होता है तो प्रारम्भ में किसी को विश्वास नहीं होता लेकिन बाद में हो जाता हैं...
संपूर्ण व्यवस्था परिवर्तन, राजनैतिक शुचिता व राष्ट्र धर्म रक्षा के आंदोलन में सक्रिय भूमिका
निभाने का उत्साह रखने वाले ईमानदार, समर्पित और निर्भिक देशभक्त भारत स्वाभिमान दल से जुड़े।
संपूर्ण व्यवस्था परिवर्तन
अन्याय, अत्याचार, शोषण व भेदभाव पर आधारित भ्रष्ट व्यवस्था
को बदलकर एक आदर्श व्यवस्था स्थापित करना यहीं हमारा उद्देश्य हैं।
अभिनव अनंत जी
भारत स्वाभिमान दल द्वारा राष्ट्रहित में जारी